हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5119

**हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्।**
**मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता॥**

2074 वि.सं.

## अनुक्रमणिका


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| श्रीमद्भगवद्गीता | 3 |
| दिन दर्शिका | 4 |
| महर्षि वाल्मीकि | 5 |
| राम जन्मभूमि आन्दोलन के कारण हुआ भारत का भगवा युग में प्रवेश, 2018 से होगा भव्य मंदिर का निर्माण प्रारम्भ | 7 |
| राजनैतिक, दूरदर्शी, विद्वान, संस्कृति के पोषक पं. दीन दयाल उपाध्याय | 8 |
| लोकदेवता बाबा रामदेव | 11 |
| 'साधू नहीं; शैतान हूँ; मैं' | 12 |
| कारसेवक पुरम् मे वेद पूजन समारोह | 14 |
| रोहिंग्या मुसलमानों की घुसपैठ | 15 |
| मानवता, धार्मिकता और राष्ट्रीयता | 16 |
| श्री भक्तमाल कथा | 18 |
| गौरी लंकेश हत्याकाण्ड : विरोध या सियासत | 19 |
| नान्दल खाप तपा बोहर | 22 |
| कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने प्रमोद कुमार बाजपेई की महाराजा अग्रसेन कॉलेज, जगाधारी में प्रिंसिपल पद पर नियुक्ति के लिए दी गई अनुमति को वापिस लिया | 23 |
| अखाडा परिषद् द्वारा जारी सूची-जो संत नहीं हैं-समुचित स्तर पर हस्तक्षेप हेत | 24 |
| विहिप द्वारा आयोजित क्रांतिकारियों के दशहरा घाट (ताजगंज) तर्पण श्राद्ध कार्यक्रम | 25 |
| महाराजा बलबंत सिंह के 165वें जन्मोत्सव पर विचारगोष्ठी का आयोजन | 26 |
| श्रद्धांजलि | 26 |


# अथैकादशोऽध्यायः

**अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः।**
**भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः॥**
**वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।**
**केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः॥२६,२७॥**

वे सभी धृतराष्ट्र के पुत्र राजाओं के समुदायों के सहित आप में प्रविष्ट हो रहे हैं। भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य तथा वह कर्ण और हमारे पक्ष के भी प्रधान योद्धाओं के सहित सब-के-सब आपकी विकराल दाढ़ों के कारण आपके भयंकर मुखों में बड़े वेग से प्रविष्ट हो रहे हैं। उनमें से कई-एक तो चूर्ण हुए सिरों सहित आपके दाँतों के बीच में फँसे हुए दिखाई पड़ रहे हैं।

भीष्म पितामह गुरू द्रोण भी-मम प्रतिद्वन्दी कर्ण वीर भी ये तो निज कर्तव्य विवश ही-करने आये धर्मयुद्ध ही द्रुपद विराट व धृष्टद्युम्न भी-पाण्डव सेना प्रमुख ये सभी मेरे जी पक्षधर साथ में-सब कर रहे प्रवेश आप में

**दोहा**

दुर्योधन के पक्ष में, जितने राजा आदि ।
पुत्र सभी धृतराष्ट्र के दुर्योधन इत्यादि ।।
बड़े वेग से और वे, समुदाय में नरेश ।
दाढ़युक्त अति भयावह, तव मुख करें प्रवेश ।।

मुख में जो प्रविष्ट हो जाते-उनको आप निगल ही जाते किन्तु कपाल ध्वस्त बहुतों के-दिखते फँसे बीच दाँतों के

**सुगम गीता व्याख्या** पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड,
केशवपुरम्, दिल्ली-110035

# कार्तिक कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०७४
# १ से १५ अक्टूबर २०१७ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — शरद ऋतु

| दिन | तिथि | नक्षत्र | प्रविष्टि सौर मास | दिनांक आंग्लमास | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | एकादशी | श्रवण | १६ | 1 | पापाकुंशा एकादशी व्रत |
| सोमवार | द्वादशी | धनिष्ठा | १७ | 2 | पंचक प्रारम्भ, महात्मा गांधी व ला.ब. शा. जयंती |
| मंगलवार | त्रयोदशी | शताभिषा | १८ | 3 | भौम प्रदोष व्रत |
| बुधवार | चतुर्दशी | पूर्वाभाद्रपद | १६ | 4 | |
| गुरुवार | पूर्णिमा | उत्तराभाद्रपद | २० | 5 | बाल्मीकि जयंती, शरद पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत |
| शुक्रवार | प्रतिपदा | रेवती | २१ | 6 | पंचक समाप्त 19-31 बजे |
| शनिवार | द्वितीया | अश्विनी | २२ | 7 | गुरु वार्धक्य प्रारंभ |
| रविवार | तृतीया | भरणी | २३ | 8 | करवा चौथ |
| सोमवार | चतुर्थी | कृतिका | २४ | 9 | |
| मंगलवार | पञ्चमी | रोहिणी | २५ | 10 | स्कन्द षष्ठी व्रत, गुरू अस्त |
| बुधवार | षष्ठी | मृगशिरा | २६ | 11 | |
| गुरुवार | सप्तमी | आर्द्रा | २७ | 12 | अहोई अष्टमी व्रत |
| गुरुवार | अष्टमी | 00 | ०० | 00 | क्षय |
| शुक्रवार | नवमी | पुनर्वसु | २८ | 13 | |
| शनिवार | दशमी | पुष्य/श्लेषा | २६ | 14 | |
| रविवार | एकादशी | मघा | ३० | 15 | रमा एकादशी व्रत |

## श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

**तेन ज्ञानफलं प्राप्तं योगाभ्यासफलं तथा ।**
**तृप्तः स्वच्छेन्द्रियो नित्यमेकाकी रमते तु यः ॥१॥ १७**

"जो पुरुष तृप्त है, शुद्ध इन्द्रिय वाला है, सदैव एकाकी रमण करता है, उसी के द्वारा ज्ञान का फल प्राप्त किया गया है तथा योगाभ्यास का फल प्राप्त किया गया है।"

**न कदाचिज्जगत्यस्मिंस्तत्त्वज्ञो हन्त खिद्यति ।**
**यत एकेन तेनेदं पूर्णं ब्रह्मांडमंडलम् ॥२॥ १७**

"निश्चित रूप से, तत्त्वज्ञानी इस जगत के विषय में कभी खेद को प्राप्त नहीं होता, क्योंकि उसी एक से ही यह ब्रह्मांड-मंडल पूर्ण है।"

# महर्षि वाल्मीकि

पुराणों के अनुसार, इन्होंने कठोर तपस्या कर महर्षि का पद प्राप्त किया था। परमपिता ब्रह्मा के कहने पर इन्होंने भगवान श्रीराम के जीवन पर आधारित रामायण नामक महाकाव्य लिखा। ग्रंथों में इन्हें आदिकवि कहा गया है। इनके द्वारा रचित आदिकाव्य श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण संसार का सर्वप्रथम काव्य माना गया है।

**इस प्रकार लिखी महर्षि वाल्मीकि ने रामायण**

रामायण के अनुसार, एक बार महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर गए। वहाँ उन्होंने प्रेम करते क्रौंच (सारस) पक्षी के जोड़े को देखा। वे दोनों पक्षी मधुर बोली बोलते थे। तभी उन्होंने देखा कि एक निषाद (शिकारी) ने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से नर पक्षी का वध कर दिया और मादा पक्षी विलाप करने लगी। उसके इस विलाप को सुन कर महर्षि की करुणा जाग उठी और अनायास ही उनके मुख से ये शब्द निकले-

**मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।**
**यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीरू काममोहितम्॥**

अर्थात्-निषाद। तुझे कभी भी शांति न मिले, क्योंकि तूने इस क्रौंच के जोड़े में से एक की, जो काम से मोहित हो रहा था, बिना किसी अपराध के ही हत्या कर डाली।

तब महर्षि वाल्मीकि ने सोचा कि अचानक ही उनके मुख से श्लोक की रचना हो गई। जब महर्षि वाल्मीकि अपने आश्रम पहुँचे तब भी उनका ध्यान उस श्लोक की ओर ही था। तभी महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में भगवान ब्रह्मा आए और उनसे कहा कि-आपके मुख से निकला यह छंदोबद्ध वाक्य (गाया जाने वाला) श्लोक रूप ही होगा। मेरी प्रेरणा से ही आपके मुख से ऐसी वाणी निकली है। अतः आप श्लोक रूप में ही श्रीराम के संपूर्ण चरित्र का वर्णन करें। इस प्रकार ब्रह्माजी के कहने पर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य की रचना की।

**महर्षि वाल्मीकि - विश्व विख्यात 'रामायण के रचयिता**

हिन्दू पंचांग के अनुसार आश्विन मास की शरद पूर्णिमा की तिथि पर महर्षि वाल्मीकि का जन्मदिवस 'वाल्मीकि जयंती' के नाम से मनाया जाता है।

वैदिक काल के महान ऋषियों में शुमार महर्षि वाल्मीकि 'रामायण' के रचयिता के रूप में विश्व विख्यात है। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत भाषा में निपुण थे और एक महान कवि भी थे। महर्षि वाल्मीकि का जन्म महर्षि कश्यप और अदिति के नौवें पुत्र वरुण और उनकी पत्नी चर्षणी के घर में हुआ। महर्षि वाल्मीकि के भाई महर्षि भृगु भी परम ज्ञानी थे।

एक समय ध्यान में मग्न वाल्मीकि के शरीर के चारों ओर दीमकों ने अपना घर बना लिया, जब वाल्मीकि जी की साधना पूर्ण हुई तो वे दीमकों के घर से बाहर निकले। चूँकि दीमकों के घर को वाल्मीकि कहते हैं, तो वे वाल्मीकि के नाम से विख्यात हुए।

पूरे भारतवर्ष में वाल्मीकि जयंती श्रद्धा-भक्ति एवं हर्षोल्लास से मनाई जाती हैं। वाल्मीकि मंदिरों में श्रद्धालु आकर उनकी पूजा करते हैं। इस शुभावसर पर उनकी शोभा यात्रा भी निकली जाती हैं जिनमें झांकियों के साथ भक्तगण उनकी भक्ति में चूर झूमते हुए आगे बढ़ते हैं। इस अवसर पर ना केवल महर्षि वाल्मीकि बल्कि श्रीराम के भी भजन भी गाए जाते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने अपनी विख्यात रचना महाग्रंथ रामायण के सहारे प्रेम, तप, त्याग इत्यादि दर्शाते हुए हर मनुष्य को सद्भावना के पथ पर चलने के लिए मार्गदर्शन दिया है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार वाल्मीकि महर्षि बनने से पूर्व उनका नाम रत्नाकर था। रत्नाकर अपने परिवार के पालन के लिए दूसरों से लूटपाट किया करते थे। एक समय उनकी भेंट नारद मुनि से हुई। रत्नाकर ने उन्हें भी लूटने का प्रयास किया तो नारद मुनि ने उनसे

पूछा कि वह यह कार्य क्यों करते हैं। रत्नाकर ने उत्तर दिया कि परिवार के पालन-पोषण के लिए वह ऐसा करते है।

नारद मुनि ने रत्नाकर से कहा कि वह जो जिस परिवार के लिए अपराध कर रहे है और क्या वे उनके पापों का भागीदार बनने को तैयार होंगे? असमंजस में पड़े रत्नाकर ने नारद मुनि को पास ही किसी पेड़ से बाँधा और अपने घर उस प्रश्न का उत्तर जानने हेतु पहुँच गए। यह जानकर उन्हें बहुत ही निराशा हुई कि उनके परिवार का एक भी सदस्य उनके इस पाप का भागीदार बनने को तैयार नहीं था। यह सुन रत्नाकर वापस लौटे, नारद मुनि को खोला और उनके चरणों पर गिर गए, तत्पश्चात नारद मुनि ने उन्हें सत्य के ज्ञान से परिचित करवाया और उन्हें परामर्श दिया कि वह राम-राम का जाप करे। राम नाम जपते-जपते ही रत्नाकर महर्षि बन गए और आगे जाकर महान महर्षि वाल्मीकि के नाम से विख्यात हुए।

**महर्षि वाल्मीकि जयंती: तप से मिलती है ऊंचाई**

तप का अर्थ है लक्ष्य पर एकाग्र होना। महर्षि वाल्मीकि ने तप के द्वारा अपने अंतस को इतनी उच्चता दी कि उन्होंने आदि महाकाव्य रामायण का सृजन कर दिया।

महर्षि वाल्मीकि ऋषियों के कुल में उत्पन्न हुए और उन्होंने अपनी तप-साधना से इतनी उच्चता प्राप्त कर ली कि उन्होंने काव्य का उद्भव कर डाला। मान्यता यह भी है कि माँ वाणी (सरस्वती) स्वयं उनकी जिह्वा पर विराजमान हो गईं और दुख से उपजा जो श्लोक निकला, वहीं से संस्कृत कविता का प्रादुर्भाव हो गया। यह श्लोक अनुष्टुप छंद में था। इसी छंद में उन्होंने महाकाव्य 'रामायण' की सर्जना की, जो संस्कृत का आदि ग्रंथ माना जाता है। बाद के संस्कृत के जो अधिकांश ग्रंथ लिखे गए, वे भी अनुष्टुप छंद में ही थे।

परम ज्ञानी भृगु ऋषि उनके भाई थे। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार, भाई भृगु की तरह ही महर्षि वाल्मीकि साधना किया करते थे।

उनकी तपस्या की इस कथा से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। साधना और तप का अर्थ है कि अपने लक्ष्य पर एकाग्र होना। महर्षि वाल्मीकि जी ने तप करके अपने अंतस को इतनी उच्चता पर अवस्थित कर दिया कि उनके भीतर से काव्य-रसामृत फूट पड़ा। यदि वाल्मीकि नहीं होते, तो आज काव्य भी नहीं होता। हम उनकी तपस्या से एकाग्र होकर अपने लक्ष्य को पाना सीख सकते हैं। कुछ कथाओं के आधार पर जो लोग यह कहते हैं कि वाल्मीकि पहले दस्यु कर्म में निरत थे, वे संभवत: गलत हैं। क्योंकि ऋषि कुल में उत्पन्न वाल्मीकि के बारे में ग्रंथों में लिखा है कि वरुण के दोनों पुत्र महर्षि भृगु और महर्षि वाल्मीकि परम ज्ञानी थे और प्रारंभ से ही तपस्वी थे। ❑

## अनमोल वचन

1. जिस प्रकार शुद्ध सोने की परख हेतु उसे तपाया, ठोका-पीटा व घिसा जाता है ठीक वैसे ही सच्चे इंसान की परीक्षा दान, पुण्य, गुण, शील, त्याग व आचरण द्वारा की जाती है। जिसमें ये सभी गुण होते हैं वही खरे सोने के समान शुद्ध होता है।
2. अधिकतर लोग अपने से ऊंचे पद को देख, ईर्ष्या से भर उठते हैं। मूर्ख लोग ईर्ष्या से वशीभूत हो विद्वानों से दुर्व्यवहार करते हैं। नाकारा लोग पुरूषार्थ प्रिय और धनवानों से घृणा करते हैं। ऐसे लोग कभी भी जीवन में आगे नहीं बढ़ते।
3. धन द्वारा धर्म की रक्षा, विद्या की रक्षा योग और लगातार अभ्यास से, कोमल और मधुर वाणी के द्वारा राजनीति और नेता की रक्षा और गृहस्थी की रक्षा धर्मपरायण नारी द्वारा ही होती है।
4. मनुष्य अकेला ही जन्मता और मृत्यु को प्राप्त होता है। अकेला ही पाप-पुण्य भोगता है और अकेला ही नानाप्रकार के कष्टों को भोगता है अपने द्वारा कृत कर्मों का भुगतान सभी को अकेले ही करना पड़ता है।
5. सत्य की नींव पर ये धरती टिकी है इसी से सूर्य का तेज व वायु का वेग, सृष्टि चक्र का परिवर्तन अर्थात् सभी का आधार सत्य है। अत: हमें भी सदैव सत्य का आचरण करना चाहिए।

# राम जन्मभूमि आन्दोलन के कारण हुआ भारत का भगवा युग में प्रवेश, 2018 से होगा भव्य मंदिर का निर्माण प्रारम्भ

-डॉ सुरेन्द्र जैन

**नई दिल्ली।** सितंबर 16, 2017। श्री राम जन्म भूमि आन्दोलन के कारण ही भारत ने भगवा युग में प्रवेश किया तथा आज यह विश्व की महा शक्ति बनने की ओर अग्रसर है। 'श्री राम जन्म-भूमि आन्दोलन एक नव जागरण' विषय पर आयोजित एक गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन ने कहा कि आन्दोलन के विविध चरणों में लगभग 16 करोड़ लोगों की भागीदारी ने इसे न सिर्फ विश्व का सबसे बड़ा आन्दोलन बनाया बल्कि विदेशी आक्रान्ता के बाबरी नामक पाप को देखते ही देखते धूल-धूसरित कर मंदिर का शिलान्यास भी कर दिखाया। यह आन्दोलन अब एक नव जागरण बन कर हिन्दुओं के स्वाभिमान और देश के सार्मथ्य को जगाने का तो कार्य कर ही रहा है साथ ही 2018 में अयोध्या जन्म-भूमि पर मंदिर को भव्यता देने का कार्य भी प्रारम्भ हो जाएगा।

गोष्ठी को संबोधित करते हुए विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विजय शंकर तिवारी ने कहा कि इसी नव जागरण ने ही भारत की राष्ट्रीयता को नए सिरे से परिभाषित कर यह स्थापित किया कि भारत बाबर, गजनी, गौरी जैसे विदेशी आक्रान्ता से नहीं बल्कि राणा सांगा, महाराणा प्रताप तथा छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे महापुरुषों के नाम से जाना जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि राम जन्म भूमि के नव जागरण के परिणाम स्वरूप ही, महर्षि अरविंद की यह बात कि इस देश का मूल रंग भगवा ही है, सत्य सिद्ध हुई है तथा भारत ने भगवा युग में पुनः प्रवेश किया है।

सेन्ट्रल दिल्ली के एनडीएमसी कन्वेशन सेंटर में उपस्थित विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार तथा प्रसार भारती के सलाहकार श्री ज्ञानेंद्र वरतारिया ने जन्मभूमि पर मस्जिद की वकालत करने वालों को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि यह तो आक्रमणकारी को आक्रान्त होने का लाभ देने के अलावा कुछ और

नहीं। उन्होंने कहा कि हिंदुत्व ही राष्ट्रीयता है और जन्म भूमि पर मंदिर की भव्यता से ही राष्ट्रमंदिर की पुनः प्रतिष्ठा हो सकेगी।

अपना आशीर्वचन देते हुए सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष महा मंडलेश्वर पूज्य स्वामी राघवानंद जी महाराज ने कहा कि जन्म भूमि मुक्ति हेतु किए 489 वर्षों के लगातार संघर्ष का परिणाम अब स्पष्ट दिखने लगा है। भगवान श्री राम की जन्म भूमि पर मंदिर की भव्यता से भारत की अनेक समस्याओं का निराकरण स्वमेव हो जाएगा।

इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद, दिल्ली के मीडिया विभाग द्वारा आयोजित इस गोष्ठी में विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत महामंत्री श्री बच्चन सिंह, उपाध्यक्ष श्री बृज मोहन सेठी, मीडिया प्रभारी श्री महेंद्र रावत, बजरंग दल के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सोहन सिंह सोलंकी, प्रांत संयोजक श्री शिव कुमार, सह संयोजक श्री श्याम कुमार, दुर्गा वाहिनी संयोजिका कु. कुसुम सहित राजधानी के कोने-कोने से आए विविध सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा व्यापार संगठनों के पदाधिकारी तथा राम भक्त उपस्थित थे।

भवदीय

**विनोद बंसल**

(राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप)

@vinod_bansal M&9810949109

## 25 सितंबर जन्मदिवस के उपलक्ष्य में

# राजनैतिक, दूरदर्शी, विद्वान, संस्कृति के पोषक पं. दीन दयाल उपाध्याय

-**महेश चन्द्र शर्मा**, पूर्व महापौर

पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 को **मथुरा जिले के ग्राम नगला चन्द्रभान में हुआ था।** पिताजी की मृत्यु 1919 में होने के कारण 1925 मामा राधारमण के यहाँ गंगापुर सिटी (राजस्थान) में प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लिया। राजस्थान में ही पढ़ते-पढ़ते 1937 **इण्टरमीडियट बोर्ड में सर्वप्रथम स्थान तथा सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की।** बोर्ड द्वारा स्वर्ण पदक व मासिक छात्रवृत्ति मिलने पर सनातन धर्म कॉलेज कानपुर में 1939 बी.ए. में प्रवेश लिया तथा इसी वर्ष प्रथम श्रेणी में बी.ए. उत्तीर्ण कर सेण्ट जॉन कॉलेज आगरा में एम.ए. हेतु प्रवेश लिया संघ शिक्षा वर्ग का प्रथम वर्ष (ओ.टी.सी.) किया। आगरा में ही संघ का नियमित कार्य भी आरम्भ किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण की उनसे जाने से मना कर संघ का प्रचारक बनने का निर्णय लिया।

संघ का द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद दीनदयाल उपाध्याय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बन गए। वह आजीवन संघ के प्रचारक ही रहे। 1942 से 1951 तक उन्होंने उ.प्र. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में जीवनव्रती प्रचारक के नाते दायित्व वहन किया। तभी उन्होंने पत्र लिख मामा जी को जानकारी दी कि वे आजीवन भारतमाता की सेवा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में रहकर करेंगे। उनके मामा व उनके परिजन इस निर्णय से बहुत परेशान हुए। उनके मामाजी उनसे पहले से इसलिए नाराज थे कि प्रशासनिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बावजूद प्रशासन का नौकरी करना स्वीकार नहीं किया। अध्यापकीय क्षेत्र में अपनी रुचि के कारण उन्होंने कानपुर से बी.टी. किया था। परिजनों की अपेक्षा थी कि प्रशासक न सही दीनदयाल अध्यापक की नौकरी तो अब स्वीकार कर ही लेंगे, लेकिन तब उन्हें बहुत दु:ख हुआ, जब दीनदयाल घर-द्वार छोड़कर संन्यासीवत् संघ के जीवनव्रती प्रचारक बन गए। उ.प्र. के लखीमपुर जिले में, जिला प्रचारक के नाते उनकी नियुक्ति हुई। प्रचारक बनकर दीनदयाल अपने मामाजी के घर नहीं गए। 1942 से 1945 तक वे लखीमपुर में ही प्रचारक रहे। उनकी बौद्धिक प्रखरता को देखते हुए 1945 में ही उन्हें संपूर्ण उ.प्र. का सह-प्रान्त प्रचारक बना दिया गया। उन दिनों उ.प्र. के प्रान्त प्रचारक श्री भाऊराव देवरस थे। दीनदयाल जी की संगठनात्मक प्रतिभा एवं संघ कार्य में उनके योगदान के विषय में भाऊराव जी ने लिखा था कि उ.प्र. संघ को जमाने में दीनदयाल जी का बहुत बड़ा योगदान था। जब महात्मा गांधी की हत्या के बाद संघ पर प्रतिबंध लगा, दीनदयाल उपाध्याय भूमिगत रहकर प्रचार एवं सत्याग्रह संचालन के सूत्रधार बने। 'पांचजन्य' को सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया। दीनदयाल ने भूमिगत रहते हुए 'हिमालय' निकाला; वह भी जब्त कर लिया गया, उन्होंने 'राष्ट्रभक्त' निकाला। इसी दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संविधान लिखा गया। दीनदयाल उपाध्याय की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

उपाध्याय जी ने भारतीय जनसंघ की यथास्थिति को तोड़कर भारतीय जीवन-मूल्यों के अनुकूल और लोकतांत्रिक तरीके से परिवर्तन का आग्रह लेकर राजनीतिक मंच पर उतारा था। 1952 के चुनाव के लिए स्वीकृत अपने प्रथम घोषणा पत्र में जनसंघ ने भारत को 'शक्तिशाली, सुसंगठित और सुसम्पन्न बनाने का ध्येय सामने रखा, 'भारत को सामाजिक और आर्थिक जनतंत्र' बनाने की बात कही, आर्थिक उन्नति के लिए 'उत्पादन में वृद्धि, वितरण में समानता तथा उपभोग में संयम' के त्रिसूत्र पर बल दिया।

उनकी प्रथम पुस्तक 'सम्राट चंद्रगुप्त' नाम से प्रकाशित हुई। स्वतंत्रता के तत्कालीन प्रयत्नों से संघ की सहमति

कम थी व उसमें नीतिमत्ता का अभाव देखते थे। 'सम्राट चंद्रगुप्त' में ऐतिहासिक पात्रों चंद्रगुप्त व चाणक्य के माध्यम से दीनदयाल उपाध्याय ने पराक्रम और रणनीतिकुशल स्वातंत्र्य प्रयत्नों की ओर युवा हृदयों को प्रवृत्त करने का प्रयत्न किया। वे अपने प्रयत्न में सफल रहे। इसके बाद उन्होंने जगत गुरु शंकराचार्य लिखा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहते हुए भी उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संचालन किया। 1945 में मासिक 'राष्ट्रधर्म' व साप्ताहिक 'पांचजन्य' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यही वह दौर था जब दीनदयाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से राष्ट्रवाद का जन-जन में जागरण कर रहे थे। लेकिन कुटिल साम्राज्यवादी अंग्रेज कुछ और ही योजना बना रहा था। उसने आजादी के आंदोलन को सत्ता लिप्सा के अभियान में बदल दिया। अंग्रेजों ने भारत से जाने की शर्त के रूप में सम्प्रदाय के आधार पर वर्णित द्वि-राष्ट्रवाद के आधार पर भारत विभाजन की शर्त रख दी। पं. नेहरू जी और कांग्रेस उनकी चाल में आ गए और भारत बँट गया। उपाध्याय जी ने 'अखण्ड भारत क्यों?' नाम की पुस्तिका लिखी, जिसमें उन्होंने प्राचीन भारत साहित्य के संदर्भित करते हुए भारत में युगों से चली आई उस सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परम्परा का उल्लेख किया। उपाध्याय जी अपनी पुस्तिका में मुस्लिम पृथकत्व की नीति, अंग्रेजों की 'फूट डालो व राज करो' की नीति, कांग्रेस की राष्ट्रीयता की विकृत धारणा व तुष्टिकरण की नीति को जिम्मेदार मानते थे। 20 दिसंबर 1887 को दिए गए सर सैयद अहमद के उस भाषण का, जिसमें उन्होंने मुसलमानों को कांग्रेस से तथा हिंदुओं से अलग रहने की सलाह दी थी का भी वर्णन किया।

प. दीनदयाल उपाध्याय उन दूर द्रष्टाओं में से एक थे जिन्होंने बृहस्पति, चाणक्य और विवेकानन्द की भाँति आधुनिक राजनीति को पारदर्शी और शुद्धता के अनुसार चलाने की प्रेरणा दी। वे महान थे। श्री उपाध्याय जी मूल विचारक थे। युवावस्था में ही उनकी बुद्धि व्यक्ति और समाज, स्वदेश और स्वधर्म, परम्परा तथा संस्कृति जैसे गूढ़ विषयों की ओर आकृष्ट हो चुकी थी। वर्षों तक भारतीय जनसंघ के महामन्त्री और अन्त में अध्यक्ष रहने के बावजूद वे दलगत राजनीति से दूर अपने दर्शन को विकसित करना चाहते थे जो भारत की प्रकृति और परम्परा के अनुकूल हो और राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति करने में समर्थ हो। 1964 में जनसंघ के ग्वालियर अधिवेशन में उन्होंने **एकात्ममानववाद** विचारार्थ प्रस्तुत किया और अगले ही वर्ष 1965 के विजयवाड़ा अधिवेशन में इसे स्वीकार कर लिया गया। उनका आर्थिक दृष्टिकोण पूर्णतया भारतीय था।

उपाध्याय जी मानते थे लोकतंत्र न बहुमत का शासन है, न अल्पमत का; वह जनता की 'सामान्य इच्छा' का शासन है। जनता अपनी सामान्य इच्छा को औपचारिक रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पाती। जब 'सामान्य इच्छा' के बारे में सामाजिक सम्भ्रम हो तो 'लोकतंत्र' भीड़तंत्र में बदल जाता है। 'एक समुचित उम्मीदवार वह है जो विधानमंडलों में अपने दल के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही अपने क्षेत्र के मतदाताओं की नब्ज को पहचानता है।

'हमारी संपूर्ण व्यवस्था का केंद्र मानव होना चाहिए। जो यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे के न्याय के अनुसार समष्टि का जीवमान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं। जिस व्यवस्था में, भिन्न रुचि लोक का विचार केवल एक औसत मानव अथवा शरीर, मन, बुद्धि व आत्मायुक्त अनेक ऐषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थ चातुष्ट्यशील, पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाए, वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है, जो एकात्म समष्टियों का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। एकात्म मानववाद के आधार पर हमें जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा।'

वे समाजशास्त्रीय व मनोवैज्ञानिक तत्त्वों से ज्यादा नीतिशास्त्र से प्रभावित थे। किसी दल को नीतिशास्त्रीय नेता उपलब्ध होना बड़े सौभाग्य की बात होती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जो आदर्श का आचरण करता है 'नीतिशास्त्र' की महत्ता को भी सिद्ध कर पाता है। 'अवसरवाद' के बारे में दीनदयाल उपाध्याय ने चेताया था, उसका जब भयानक दौर भारत में प्रारंभ हुआ, उसी दौर में उनकी हत्या हो गई।

समाज में अर्थ का अभाव अथवा अभावमूलक नियोजन समाज में अधर्म को धर्म बना देता है। वैसे ही

'अर्थ का प्रभाव भी धर्म का नाश करता है। भोग-विलास में संग (आसक्ति) उत्पन्न कर देता है। हर व्यक्ति समाज का प्रतिनिधित्व करता है। अत: वह समाज की सम्पत्ति के एक हिस्से का 'न्यासी' या संरक्षक है। साम्यवादी जो निजी संपत्ति की भावना को जड़मूल से समाप्त कर देना चाहते थे, पहले व्यक्तिगत और फिर कुछ-कुछ अंश में निजी सम्पत्ति को भी स्वीकार करने लगे। 'जहाँ तक कुटीर उद्योगों' का सवाल है, यह खतरा बहुत कम है। लेकिन जहाँ बड़े उद्योगों का क्षेत्र शुरू होता है वहाँ यह खतरा उत्पन्न होता है।

दीनदयाल उपाध्याय लोकतंत्र को केवल राजनीतिक जीवन का आयाम नहीं मानते। उनका मत है, 'प्रत्येक को वोट' जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निकर्ष है, वैसे ही 'प्रत्येक को काम' यह आर्थिक प्रजातंत्र का मापदण्ड है। साथ ही उन्होंने **अन्त्योदय का सिद्धान्त** दिया जिसका अर्थ देश अंतिम छोर पर बैठा हुआ गरीब आदमी उसकी योग्यता के अनुसार काम का अवसर देना। 1967 जनसंघ मध्य प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश में पूर्ण रूप और उ. प्र., बिहार तथा अन्य प्रदेशों में **संविद सरकारें उन्होंने अन्त्योदय को अपनाया।** राजनीति में कुछ वामपंथी बड़े लोग उनके शत्रु बन गए और सरल, दूरदर्शी, भारतीयता से परिपूर्ण महापुरुष का मुगल सराय रेलवे स्टेशन पर मरे हुए पाए गए।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो। समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब और बढ़ जाती है जब हम देखते हैं कि विकसित देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षों तक राज्य किया तथा उसके राज्यकाल में उनके पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने संबंध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों के रहन-सहन, बालचाल, खान पान आदि के तरीके भी देश में आये। भौतिक-विज्ञान ही नहीं अपितु नीतिशास्त्र, राज्य-व्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बन गए 11 सितम्बर, 1893 को स्वामी विवेकाकान्द ने विश्वधर्म सम्मेलन में इसका उल्लेख किया था। **आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव है। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चले गये हैं तब अंग्रेजियत और अंग्रेजी भाषा पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है।** यदि यह सत्य है तो संकुचित राष्ट्रीयता की भाव को आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक न होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन के मोहावरण का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। यह विवेचना राष्ट्रीयता के मूल विचार जनसंघ के महामंत्री एवं अध्यक्ष रहे **पं. दीनदयाल उपाध्याय जी** को जैसा मैंने उनके संपर्क में आने से निरंतर दस-बारह वर्षों में देखा वे बहुत बड़े **संगठनकर्ता** थे वे अपने साधारण कार्यकर्ताओं को बड़े व्यक्तियों से बड़ा मानते थे और उन्हें बहुत महत्त्व देते थे। उनका कार्यकर्ताओं से कहना था कि ● **'मैं' अहंकार का प्रतीक है।** अहंकार विवेक का हरण कर लेता है, अत: अहंकाररूपी बंधन का परित्याग कर दीजिए **'मैं' स्वत: ही समाप्त हो जाएगा।** ● **मान-सम्मान मोह का प्रतीक है। इससे लालसा बढ़ती है,** अत: कार्यकर्ता को सर्वदा इससे दूर रहना चाहिए। ● **पद की आकांक्षा प्रलोभन का प्रतीक है,** अत: कार्यकर्ता पद के पीछे न दौड़ें, बल्कि पद कार्यकर्ता के पीछे दौड़े। कार्यकर्ताओं को जोड़ने का मूल मंत्र है-**श्रेय देते रहना।** इससे आत्मीयता बनती है और कार्यकर्ता मन:पूर्वक जुड़ते हैं। 'थोड़ी सी मुस्कराहट दे दो, उन्हें गुलिस्तां मिल जायेगा। अपनों का एहसास दे दो, उनका हौसला बढ़ जायेगा। ● व्यक्तित्व विकास के लिए स्वभाव के साथ-साथ **वाणी की मधुरता परम आवश्यक है।**

मो. : 9911366200 नि0 : 23693036
अध्यक्ष, दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन
62, विवेकानंद पुरी
अध्यक्ष, आपातकाल बन्दी स्मरण समिति, भा.ज.पा.
किशन गंज, दिल्ली-110007
ई-मेल-mahesh.hindi@gmail.com

# लोकदेवता बाबा रामदेव

**-धर्मनारायण शर्मा**

गतांक से आगे.....

अजमाल जी अभी भी भावावेश में ही थे। मन्दिर से निकल समुद्र पर आये और जल में कूद गये और गहरे पानी के नीचे बैठ गये। क्या देखते है भगवान द्वारिकाधीश शेषनाग सिंहासन पर विराजित है और श्री लक्ष्मी जी बायीं ओर शोभा दे रही है। अजमाल जी ने देखा कि भगवान के ललाट पर कुछ चोट लगी हुई है। हाथ जोड़कर विनती करते हुए बोले प्रभु! आपके ललाट पर चोट, हाँ भक्त आज एक भक्त ने मेरे ललाट पर लड्डू फेंककर मारा है उसी की चोट का निशान है। प्रभु आपका अपराधी मैं ही हूँ। भगवान ने कहा भक्त मैं तुमसे रूष्ट नहीं हूँ बल्कि प्रसन्न हूँ। तुम कोई वर मुझसे माँग लो। अजमाल जी बोले प्रभु आप सब कुछ जानते हो, मेरी तो एक ही चाह है कि आप मेरे पुत्र रूप में मुझे प्राप्त हो। भगवान द्वारिकाधीश ने अजमाल जी को वर देते हुए कहा अजमाल, तुम्हारे घर में प्रथम पुत्र बिरमदेव होंगे और उसके पश्चात् मैं आऊँगा और जब मैं आऊँगा तो तुम्हारे महल में कुंमकुंम के पैर अंकित हो जायेंगे तथा मैं बिरमदेव के साथ पालने में प्रकट होऊँगा। यह आश्वासन भरा वरदान पाकर अजमाल जी प्रसन्नतापूर्वक शीघ्रता से पोकरण की ओर रवाना हो गये। पोकरण पहुँचकर सारा समाचार मेणादे को सुनाया। वह भी यह सब सुनकर प्रसन्न हो गई।

अब मेणादे व अजमाल जी द्वारिकाधीश के अवतार की प्रतिक्षा करने लगे। शीघ्र ही वह दिन माघ शुक्ल पंचमी विक्रम संवत् 1409 (ई.सन् 1352) को आयी जब महल में कुंमकुंम के पगलिया दिखाई दिये, दासी ने देखा पालने में एक बालक के साथ एक सुन्दर सा दूसरा बालक भी लेटा हुआ हैं। दासी ने भागकर यह शुभ समाचार मेणादे व अजमाल जी को दिया। सब भागकर पालने के पास पहुँचे। मेणादे ने इस नवीन बालक को उठा लिया। उसे अपने स्तनों में दूध की हलचल अनुभव हुई व उसका हृदय मातृभाव से भर गया। कुछ दिनों बाद राजपुरोहित जी दोनों बालकों का नामकरण करते हुए अजमाल जी को बताया कि पहले बालक का नाम बिरमदेव निकला है व दूसरे बालक का नाम रामदेव बोला जायेगा। रामदेव की कुण्डली में तो अवतार के लक्षण दिखते हैं। मुझे लगता है यह बालक आपका ही नहीं तो देश का नाम भी रोशन करेगा। इस बालक की आयु लम्बी नहीं है परन्तु अपने अल्पायु में ही यह चमत्कारों की सृष्टि करेगा।

एक दिन मेणादे बालकों को दूध पिला रही थी उसी समय उसके मन में शंका पैदा हुई कि रामदेव वास्तव में द्वारिकाधीश ही हैं। उसी क्षण चूल्हें पर रखा दूध उफनकर बाहर निकलने लगा। मेणादे क्या देखती है बालक रामदेव चलकर चूल्हे तक गया और उबलते हुए दूध को उतारकर रख दिया। माता मेणादे क्षमा मांगने लगी कि मैंने द्वारिकाधीश पर शंका की तुरन्त ही बालक को छाती से लगाया। इस पर मेणादे के आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे। वह बार-बार बालक को देखकर प्रसन्न होने लगी।

**बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध**-चन्द्रमा की बढ़ती कलाओं की तरह बालकों की बढ़ती होने लगी। उनकी बाल-लीलाओं को देखकर माता-पिता के साथ महल के दास-दासियाँ भी प्रसन्नता में झूमने लगे। बच्चों के बड़े होने पर अजमाल जी को उनकी शिक्षा-दीक्षा की चिन्ता सताने लगी। एक दिन अजमाल जी ने गुरु बालीनाथ जी के सामने उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रस्ताव रखा। बालीनाथ जी ने अजमाल जी को आश्वस्त करते हुए दोनों बालकों को शिक्षा देने का कार्य स्वीकार कर लिया। इन बालकों को योग्य बनाने के लिये बालीनाथ जी ने उन्हें इतिहास, धर्म-दर्शन तथा ठीक प्रकार से अक्षर का ज्ञान कराया। बालीनाथ जी स्वयं नाथ सम्प्रदाय के होने के कारण उन्होंने रामदेव जी को तंत्र-मंत्र, योग, आयुर्वेद आदि की शिक्षा से भी योग्य

शेष पृष्ठ 18 पर....

# 'साधू नहीं; शैतान हूँ; मैं'

गुरमीत सिंह उर्फ रामरहीम के अत्याचारों, दुराचारों व झूठे चमत्कारों के नित्य आने वाले समाचारों से यह ज्ञात हो रहा है कि सच्चा डेरा सौदा का मुखिया कोई बाबा नहीं बल्कि धर्मांधों व अंधविश्वासियों का माफिया डॉन है। उसके अत्याचारों का कच्चा चिठ्ठा जैसे-जैसे खुलता जा रहा है वैसे-वैसे चालबाज गुरमीत स्वयं चिल्ला चिल्ला कर मानों कह रहा हो कि 'साधू नही शैतान हूँ मैं'। उसके 700 एकड़ से भी ज्यादा क्षेत्र में फैले हुए डेरे में बनी अय्याशी की गुफा से कलयुगी बाबा गुरमीत रहस्यमयी सुरंगों के मार्ग से साध्वियों के निवास व स्कूल बालिकाओं के छात्रावासों से जुड़ा हुआ था। उन सुरंगों की दीवारें भी यौनाचारों की शोषित अबलाओं की चीखों की गवाह होगी जो चीख-चीख कर कहती होंगी की यह कोई 'साधू नहीं शैतान है'। संत के चोले में आस्थाओं की फसल उगा कर उन्हें उजाड़ने वाला साधू कैसे हो सकता है? वर्षों पहले एक फिल्म आयी थी 'साधू और शैतान' उसमें भी दोनों पात्र अलग-अलग पुण्य और पाप कर्म करते हुए दिखाए गए थे। परन्तु गुरमीत सिंह ने तो दोनों भूमिकाओं को स्वयं निभा कर फिल्म जगत को भी एक विचार सोचने को दे दिया। यह अब 'मक्कारी का महानायक' बन चुका है। जिसप्रकार दिन-प्रतिदिन मीडिया के माध्यम से गुरमीत की दिनचर्या के दुष्ट कार्यों के रहस्य खुल रहें है वह अत्यंत आक्रोशित व आश्चर्यचकित करने वाले है। इस दुराचारी भारतीय नागरिक ने बाबा बन कर सच्चा सौदा डेरे के प्रति भारतीय भक्तों की आस्थाओं की फसल को पोषित करने के स्थान पर उसको उजाड़ते रहने का अपराध करके एक संत के चोले को ही तार-तार कर दिया है। पूर्व में भी अनेक दुराचारी बाबाओं की रहस्यमय जिन्दगी के समाचार आते रहें है, परन्तु गुरमीत सिंह ने जिस प्रकार अपने बगिया की कलियों को कुचला है वह डेरे के श्रद्धालुओं के साथ विश्वासघात की पराकाष्ठा है। सामान्य रुप से धर्म के प्रति आशावान व आस्थावान होना एक सामान्य व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। परन्तु उन समर्पित आस्थाओं पर लक्षित दुराचार और अत्याचार करना धर्म का घोर अपमान है। गुरमीत को

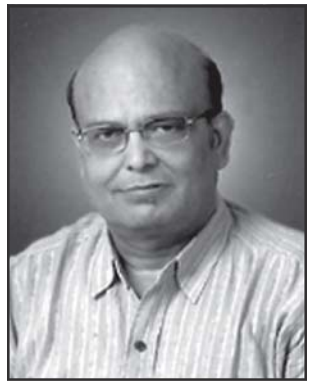

रामरहीम कहने में भी अब ग्लानि होने लगी है, वास्तव में इस ढोंगी दुष्ट ने गुरुओं व संतों के पद को ही कलंकित कर दिया हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में तपस्वी, त्यागी, समर्पित व ज्ञानी ऋषि-मुनियों और संत-महात्माओं के प्रति समाज कब तक आशंकित नहीं होगा? क्या गुरमीत के इन चरित्रहीन आचरणों के कारण चरित्रवान, सदाचारी व आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति भी आस्था एक सामाजिक समस्या बन कर उभरेगी?

इस प्रकार भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों द्वारा स्थापित 'गुरु-शिष्य' की प्राचीन परम्परा पर गुरमीत की रहस्यमयी दुनिया का यह कडुवा सच वर्षों-वर्षों तक समाज के बहुमुखी विकास को प्रभावित कर सकता हैं? वास्तव में संत, साधू और महात्मा आदि के कार्य सदा परोपकारी होते हैं। अतः आज इनको परिभाषित करने की पुनः आवश्यकता हैं। ध्यान रहें कि संत और महात्मा आदि कहलाने का अधिकार केवल उस महान व्यक्ति को होता हैं जो अपने सद्चरित्र और अच्छे आचरण के साथ ज्ञान-विज्ञान से अभावग्रस्त व अज्ञानी समाज के अंधकारमय जीवन को प्रकाशवान बना देता हैं। भारतीय दर्शन शास्त्रों में 'गुरु-शिष्य' परम्पराओं की अनेक प्रेरणादायी संस्मरण हैं। उनके उल्लेख की यहाँ आवश्यकता नहीं हैं। लेकिन यह सोचना अत्यंत आवश्यक हैं कि किसी के जीवन को अंधकारमय करके उसे नारकीय पीड़ा देने वाले दुष्ट को कभी भी संत या साधू समझ कर गुरु या फिर भगवान कैसे माना जा सकता?

परन्तु दुर्भाग्यवश आज देश में गुरमीत जैसे ढोंगी व दुराचारी शैतानों का कारोबार महात्मा, स्वामी, साधू, संत एवं बाबाओं आदि के चोले में सामाजिक अज्ञानता के कारण खूब फल-फुल रहा हैं। प्रायः अज्ञानी व भोले स्वभाव वाला समाज अपनी तर्कहीनता के कारण और

विशेषरुप से स्वार्थ के वशीभूत चालाक व धूर्त बाबाओं के चंगुल में सरलता से समर्पित हो जाता हैं। जब कोई समाज ऐसे बाबाओं का अंध भक्त हो जाता हैं और उसको अपना गुरु मान लेता हैं तब ऐसे समाज के लोग ही अपने संपर्कों से अपने-अपने सम्बन्धियों व मित्रों को भी उसी बाबा की शरण में ले जाकर उसको 'गुरु' बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार एक अंधविश्वास धीरे-धीरे विश्वास में परिवर्तित होकर श्रद्धा का रुप पा जाता हैं। जिसके फलस्वरूप बाबाओं का अपना एक छद्म आभामंडल समाज को प्रभावित करने लगता हैं। यहीं वह कमजोर कड़ी हैं जहाँ से ऐसे दुष्टों का अपने भोले-भाले शिष्यों और शिष्याओं को ठगने का कार्य आरंभ होता हैं। इस प्रकार धर्म का व्यवसायीकरण होने से उसमें अध्यात्म का अभाव हो रहा हैं जिससे आज समाज का नैतिक व चारित्रिक पतन चरम पर है। ऐसी भी सूचनाएँ आती है जिनसे ज्ञात होता है कि अनेक तथाकथित धर्माचार्यों ने अपने आश्रम व डेरे आदि की सहायतार्थ दान प्राप्त करने के लिये एजेंट भी नियुक्त किये होते है। ऐसे स्थलों को प्राय: अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति मानने वाले ये ढोंगी बाबा भविष्य में अपने ही अति प्रिय या पारिवारिक लोगों को ही अपना उत्तराधिकारी घोषित करते है। अनेक अवसरों पर अपराध की दुनिया से जुड़ें अपराधियों ने अपने को कानून से बचाने के लिये संत का चोला धारण करके समाज के साथ विश्वासघात किया है। इस कलयुग में दुष्ट व आपराधिक पृष्ठभूमि वाले विभिन्न धर्माचार्यों के किस्से आते रहते है। परंतु वैधानिक प्रक्रिया की शिथिलता व कठोर कानूनों के अभाव का अनुचित लाभ उठाकर ये धर्मद्रोही बचते रहें है। क्या कलयुग में सद्गुणों की शिक्षा देने वाले ग्रंथो को छोड़कर मक्कारों और दुष्टों को अपना गुरु बनाने वाला समाज ऐसे ही ठगा जाता रहें और हमारे नीतिनियन्ता अपना संविधानिक दायित्व भी न निभाये तो यह अंधभक्ति व सामाजिक बुराई कैसे समाप्त होगी?

लेकिन दुर्भाग्यवश आज जब सारा जगत सच्चा डेरा के मुखिया गुरमीत की दुष्टता व चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा पर आक्रोशित और शर्मसार हो रहा है वही हरियाणा के एक मंत्री के समान अनेक राजनेता व कुछ और प्रभावशाली लोग अभी भी डेरे के प्रति निश्चिंत है। इन प्रभावशाली मंत्री जी के अनुसार 'सजा बाबा को हुई है डेरे को नही और डेरा गैरकानूनी साबित नही हुआ है।' इन मंत्री जी ने पिछले दिनों अपने कोटे से 50 लाख रुपये भी डेरे को दिये थे। अब यह कौन प्रमाणित करेगा कि जिस डेरे का मुखिया इतना बड़ा अपराध डेरे की ही आड़ में और उसी की अपार सम्पदा को भोगते हुए 'अपने चाल, चरित्र और चेहरा के छलावे' से डेरे के भक्तों को ही प्रताड़ित करता रहा और उनको मृत्यु लोक में भी पहुचायें जाने का दोषी हो सकता है, तो फिर ऐसे डेरे को संदिग्ध कैसे नही माना जायेगा। यहाँ यह भी विचारणीय बिंदु है कि क्या गुरमीत सिंह इन दुष्ट कार्यों में बिना अपने (रामरहीम) तथाकथित भक्त व डेरा निवासियों की सहायता में सफल हो सकता था? इसमें कोई आश्चर्य नही होगा कि यह सब दुराचार बड़ी योजनाबद्ध षड्यंत्र के अंतर्गत वर्षों से चलता आ रहा है और इसमें रामरहीम के अनेक 'विशिष्ट भक्त' भी संलिप्त होगें। अत: विधि अनुसार वह स्थान जहाँ अपराध हुआ है वह भी सील होना चाहिये और उन विशिष्ट भक्तों पर भी वैधानिक कार्यवाही होनी चाहिये। साथ ही ऐसी व्यवस्था बनें कि भविष्य में अय्याशी, अनैतिक और अवैध कार्य किसी भी डेरे या आश्रम में हो उस पर तत्काल प्रतिबंध लगना चाहिये।

यह ठीक है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनेताओं को डेरा प्रेमियों की वोट चाहिये परंतु मानवता की रक्षार्थ अबलाओं की चीख-पुकार और अन्य अपराधों से उनको कुछ लेना देना नही, क्यों? क्या राजनेता अपने सत्ता सुख के लिये ढोंगी बाबाओं को बचाकर अराजकता व अपराध को बढ़ावा देने का अनुचित कार्य करके संविधान का उल्लंघन नहीं कर रहें? विचार करना होगा कि भोले-भाले समाज को अनेक प्रकार से भक्ति के नाम पर भ्रमित करके अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ा कर उनके एकजुट मताधिकारों के बल से राजनैतिक दलों पर दबाव बना कर अबला व दुर्बल समाज की भावनाओं से

शेष पृष्ठ 25 पर....

# कारसेवक पुरम् मे वेद पूजन समारोह

अयोध्या (10 सितंबर) वेद को समाप्त करने का चलता रहा षड्यंत्र, जो आज भी सनातन विरोधी तत्वों के माध्यम से जारी है। परंतु वेद लुप्त होने वाला नहीं है क्योंकि यह साक्षात् भगवान यानी हिन्दू समाज का मेरूदंड है।

यह विचार कारसेवक पुरम् में महर्षि वसिष्ठ विद्या समिति द्वारा संचालित श्रीराम वेद विद्यालय द्वारा आयोजित 'वेद पूजन' समारोह के मुख्य वक्ता जगदगुरू रामानुजाचार्य राघवाचार्य ने कहा वेद संहिता मात्र नही यह ब्रह्मस्वरूप है, जो पढने के उपरांत ही पूर्ण होता है। वेदौखिलो धर्ममूलम् – वेद ही धर्म का मूल है। उन्होंने कहा वेद दिव्यता से परिपूर्ण है। प्रत्येक युग का कर्म ईश्वर ने लिपिबद्ध कर दिया है। जिस जीवन और कर्म को मनुष्य आज जी रहा है वह तो वेद में पूर्व निर्धारित हो चुका है। श्रवण मात्र से ही वेद की ऋचायें कल्याणकारी सिद्ध हो ऐसे वेद का संरक्षण संवर्धन आवश्यक है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि फैजाबाद सांसद लल्लू सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा देश समाज और समस्त संसार का कल्याण वेद मे समाविष्ट है। विहिप संरक्षक स्व. अशोक सिंहल जी के महासंकल्प की सिद्धी वेद के प्रचार प्रसार में ही निहित है। इस अभियान को गति देने के लिए हर संभव प्रयास किया जायेगा। फैजाबाद मे संस्कृत विश्व विद्यालय की स्थापना की माँग भी संस्कृत शिक्षा और वैदिक विद्वानों के उत्थान का माध्यम बने इसी लिए किया गया है। धर्म संस्कृति और समाज का संरक्षण संवर्धन हमारे वैदिक धर्मग्रंथों के द्वारा ही संभव है।

अयोध्या विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने कहा वेद और वैदिक विद्वान इस देश के धरोहर है। अयोध्या की गरिमा और सम्मान धार्मिक अनुष्ठानों में ही समाहित है। इसका संवर्धन हर हाल मे किया जायेगा।

विहिप केन्द्रीय मंत्री राजेन्द्र सिंह 'पंकज' ने कहा आज हिन्दू समाज को अपने शिक्षा के प्रति निष्ठावान जागरूक होना होगा। सही शिक्षा ही हमें उच्च शिखर पर जहाँ आसीन करती है वही वेद जैसे हमारी संहिता हमारे जीवनमूल्यों की सुरक्षा करते हैं। उन्होंने कहा विहिप संरक्षक स्व. अशोक सिंहल जी का सदैव प्रयास रहा कि वेद की शिक्षा का विस्तार हो और इसके लिए उन्होंने देश भर मे संत धर्माचार्यो तथा सामाजिक संगठनों के संरक्षण में वेद विद्यालयों की स्थापना करायी। विहिप वेद शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ही विश्व वेद सम्मेलनों का आयोजन करती रही है। आज इस महान ग्रंथ का संरक्षण आवश्यक है।

अपने आशीर्वचन मे सदगुरूसदन गोलाघाट के महंत शिया किशोरी शरण महाराज ने कहा हिन्दुओं की आचार संहिता का दर्शन वेदों में संनिहित है। वेद के संबंध में हर हिन्दू धर्मावलंबी को जानना चाहिए यह हमारे धरोहर है। उन्होंने कहा हिन्दू समाज वेद भगवान के कारण ही आज सुरक्षित है। वेद अगर समाप्त हो जाते तो हमारा अस्तित्व भी समाप्त हो जाता। स्व अशोक सिंहल जी ने वेद विद्यालयों की स्थापना कराकर अपने हिन्दू होने तथा धार्मिक जीवनमूल्यों की रक्षा के उत्तरदायित्वो का निर्वाहन किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य तथा मणिराम दास छावनी के उत्तराधिकारी महंत कमलनयन दास शास्त्री ने कहा वेद यानि साक्षात् हमारे ईष्ट जिनकी पूजा अर्चना कर के ही हम अपने पुरातन सभ्यता संस्कृति और धार्मिक परंपराओं को अक्षुण रखे हुए हैं। वेदों को पूर्वकाल में दुर्गमासुर जैसे राक्षसों ने भी समाप्त करने का भरसक प्रयत्न किया जो कुछ समय के लिए हुआ भी, वेद लुप्तप्राय हो गये जिसके कारण जप, तप, यज्ञ सभी बंद सारा वातावरण दूषित हो गया। प्रकृति प्रदत्त संसाधन नष्ट हो रहे थे उसी समय माता दुर्गा का आह्वान हुआ और दुर्गा ने दुर्गमासुर

का वध कर वेदों को मुक्त कराया।

उन्होंने कहा आज इस धार्मिक देश को समाप्त करने के लिये विदेशी षड्यंत्रकारी यहाँ इस देश की पीठ पर खंजर भौंकने वाले कथित सेक्यूलर बिरादरी को अपना हितैषी बनकर हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को तहस -नहस करने के लिये लगातार सक्रिय है। उन्होंने कहा वेदों मे हर समस्याओं का समाधान है। आज आतंकवाद जिस तरह सिर उठाये हुए है, उसके मर्दन का उपाय भी है। उन्होंने कहा प्राचीन काल में राक्षस क्या थे आतंकवादी ही तो थे। जिनका संहार वेदों को सुरक्षित रखने वाले हमारे देवी-देवताओ ने ही तो किया।

उन्होंने कहा आज हिन्दू समाज को अपने शिक्षा के प्रति निष्ठावान जागरूक होना होगा। सही शिक्षा ही हमें उच्चशिखर पर जहाँ आसीन करती है वही वेद जैसे हमारी संहिता हमारे जीवनमूल्यों की सुरक्षा करते हैं।

कार्यक्रम का संचालन आचार्य नारद भट्टाराई ने किया इस अवसर पर महंत छविराम दास संत देवेश दास, संत बालमुकुंद शरण, योगाचार्य डॉ चैतन्य, भाजपा नेता हरिशंकर सिंह, वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉ. संजीव थापर, विहिप प्रान्तीय मीडिया प्रभारी शरद शर्मा, पूर्व जिलाध्यक्ष रामलाल जायसवाल, वेद विद्यालय समिति के मंत्री राधेश्याम मिश्र, कोषाध्यक्ष गोपाल केसरवानी, प्रधानाचार्य इंद्रदेव मिश्र, प्रभारी शिवदास सिंह, एस एन अग्रवाल, डॉ कुसुम लता अग्रवाल, संस्कृत विद्वान आचार्य दीपक शास्ती, संगीतज्ञ सुमधुर, बाबा गया शरण सहित वैदिक विद्वान और बटुक उपस्थित रहे।

प्रेषक

**शरद शर्मा**

# रोहिंग्या मुसलमानों की घुसपैठ देश के लिऐ खतरा-संदीप आहूजा

अखण्ड भारत मोर्चा विश्वास नगर जिला द्वारा मंडावली वार्ड के पदाधिकारियों की घोषणा के लिए मंडावली स्कूल ब्लॉक में एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्यरुप से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा एवं जिला अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सिंह विनोद उपस्थित थे। श्री आहूजा ने अखण्ड भारत पर विस्तृत जानकारी देते हुऐ भारत को खंडित करने के अभी भी प्रयास चल रहे है। रोहिंग्या मुसलमानों की घुसपैठ पर चिंता जताते हुऐ श्री आहूजा ने कहा कि भारत मे डेमोग्राफिक चेंज लाकर पुनः भारत के टुकड़े करने का षडयंत्र चल रहा है। इसीलिए इन्हें जम्मू में बसाया जा रहा है जम्मू जनसांख्याकिय बदलाव लाकर हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बनाने की साजिश की जा रही है। नव नियुक्त पदाधिकारिओं को अखण्ड भारत का संकल्प दिलवाया।

अखण्ड भारत मोर्चा मंडावली वार्ड के नवनियुक्त संयोजक चौधरी करम सिंह अध्यक्ष श्री विकास शर्मा, महामंत्री श्री सचिन रोशा, उपाध्यक्ष श्री जतिन रोशा, मंत्री श्री अरुण कुमार, श्री बृजेश यादव, को वार्ड में नियुक्त किया गया। जिलाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र विनोद ने जानकारी दी कि 10 सितम्बर को मधुबन चौक लक्ष्मी नगर से रोहिंग्या मुसलमानों के खिलाफ एक पैदल मार्च निकाली जायेगी।

कार्यक्रम में मुख्य रुप से जिला मंत्री श्री कुलदीप सिंह, उपाध्यक्ष श्री मनोज चौहान, जिला प्रचारमंत्री श्री शिवा ठाकुर, महिला मोर्चा अध्यक्ष श्रीमती सुनीता कश्यप के अतिरिक्त श्री दर्शन कुमार, श्री अनिल कुमार, आदि गणमान्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

**विश्वेश्वर शर्मा**

महामंत्री 971759826

**चुनौतियाँ ही जीवन को रोमांचक बनाती है और इसी से जीवन का महत्त्व निर्माण होता है।**

# मानवता, धार्मिकता और राष्ट्रीयता

-डॉ. विनोद बब्बर

क्या भारत एक अंतर्राष्ट्रीय सराय है? घुसपैठियों का स्वर्ग है? क्या किसी को अपने घर में बसाने से पहले उसका चरित्र और व्यवहार नहीं देखना चाहिए? क्या आँख बंद कर दुनिया के किसी भी देश से आने वाले शरणार्थियों को स्वीकार कर लेना चाहिए? क्या मानवता राष्ट्रीयता से बढ़कर है? सरकार की प्रथम जिम्मेवारी उसके अपने नागरिक हैं या शरणार्थी? इन दिनों ऐसे अनेक प्रश्न उठ रहे हैं। कारण है म्यंमार के रोहिंग्या शरणार्थियों को भारत में बसाने अथवा न बसाने पर चल रही बहस।

रोहिंग्या शरणार्थियों के बारे में भारत में बहुत जानकारी नहीं रही हैं लेकिन मीडिया में इनकी चर्चा कुछ वर्ष पूर्व बोधगया में हुए बम विस्फोटों के बाद से आरंभ हुई। इसलिए यह जानना जरूरी है कि ये रोहिंग्या हैं कौन? ये लोग हमारे पड़ोसी देश म्यांमार के अराकान प्रांत में रहते हैं लेकिन मूल रूप से ये बांग्लादेशी मुस्लिम हैं। भारत की स्वतंत्रता से कुछ समय पूर्व आजाद हुआ म्यांमार बौद्ध बहुल देश है। वर्तमान तनाव का कारण समझने के लिए हमे थोड़ा पीछे जाना पड़ेगा।

दरअसल इस्लाम और बौद्ध जीवन दर्शन में बहुत भिन्नता है। बौद्ध अहिंसा के पुजारी हैं तो इस्लाम कुर्बानी का पक्षधर है। 16वीं शताब्दी में बर्मा (म्यंमार का पुराना नाम) के राजा ने पशु वध को अमानवीय बताते हुए इस पर पाबंदी लगाई। लेकिन ये लोग किसी भी कीमत पर उसे मानने को तैयार न थे। हालांकि कालांतर में कुछ बदलाव भी हुआ। यथा उनसे कहा गया कि वे पशुवध के बाद घर से निकलने से पहले यह सुनिश्चित करें कि कपड़ों पर खून के निशान न हो। ताकि खून देखकर दूसरे लोगों की भावनाएँ आहत न हो। लेकिन वे इसे मानने को तैयार न थे।

तनाव के बावजूद रोहिंग्या मुसलमान पशुवध जरूर करते है। इससे वहाँ के लोगों में यह आम धारणा बनी कि वे स्थानीय लोगों की भावनाओं का कभी भी सम्मान नहीं करेंगे।

एक अन्य कारण यह कि शेष विश्व में भी इस्लाम का बौद्ध सहित सभी अन्य धार्मिक विश्वासों को अस्वीकार करना है। बुद्ध की विशाल मूर्तियाँ प्रमाण है एक समय बौद्ध मत अफगानिस्तान के बामियान प्रांत तक फैला था। लेकिन इस्लाम के उदय के बाद स्थिति बदली। मुस्लिम आक्रमणकारियों से परेशान होकर बौद्धों को वह क्षेत्र छोड़ना पड़ा। आक्रांता लगातार इन विशाल मूर्तियों को नुकसान पहुँचाने में लगे रहे। अंततः 2001 में तालिबानी शासक मुल्ला उमर ने विश्व विरासत में शामिल उन प्रतिमाओं को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इस घटना के बाद म्यंमार में खुशी मनाये जाने से वहाँ उनके प्रति 'असहिष्णु' होने की धारणा बनी।

भारत और शेष विश्व की तरह म्यंमार में भी रोहिंग्या मुसलमानों ने स्थानीय लोगों के साथ समन्वय नहीं किया। कट्टरता जारी रही। जिन क्षेत्रों में ये बहुमत में आ गये उन्होंने वहाँ के मूल निवासियों का सफाया करना आरम्भ कर दिया। इसी प्रकार की अनेक घटनाओं के बाद म्यंमार के लोग इन्हें विदेशी और देशद्रोही मानने लगे। क्योंकि वे म्यंमार को काटकर अपने अलग देश की माँग भी करने लगे। स्वाभाविक रूप से वहाँ की सरकार और सेना को इनके विरूद्ध कार्यवाही करनी पड़ी।

बेशक वर्तमान समस्या म्यंमार की है लेकिन हमारे मानवाधिकारी संगठन बहुत परेशान हैं। ये वे लोग हैं जिन्हें आतंकवादियों तक के मानवाधिकारों की चिंता रहती है लेकिन निर्दोषों और विपरीत परिस्थितियों में काम कर रहे सुरक्षाबलों के जवानों के मानवाधिकार याद नहीं रहते। ये संगठन रोहिंग्याओं को भारत में बसाने की माँग करते हुए देश की सबसे बड़ी अदालत तक जा पहुँचे है। आश्चर्य कि बात तो यह है कि जिस कश्मीर में धारा 370 के कारण किसी दूसरे राज्य के भारतीय नागरिक वहाँ नहीं बस सकते। यहाँ तक कि वे कश्मीरी पंडितों को वहाँ फिर से बसाने को तैयार नहीं है परंतु वहाँ भी इन रोहिंग्या शरणार्थियों को अपने यहाँ शरण देने को तैयार है क्योंकि वे एक खास सम्प्रदाय के है।

वैसे यह कोई पहली बार नहीं है। इससे पूर्व भी करोड़ों बंगलादेशी घुसपैठियें अवैध रूप से यहाँ रह रहे हैं। पुलिस रिकॉर्ड साक्षी है कि ये लोग बड़ी संख्या में आपराधिक घटनाओं में शामिल रहते है। अनेक लोग अन्य काम भी करते है। पिछले दिनों नोएडा में घरेलू कामकाज करने वाली बंगलादेशी महिला के चोरी करते पकड़े जाने पर उन लोगों ने उस अपार्टमेंट पर पत्थरों से हमला किया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अनेक बंगलादेशी घुसपैठियों ने भ्रष्ट व्यवस्था का लाभ उठाते हुए अपने वोटरलिस्ट में अपने नाम दर्ज करवाने के लिए आधारकार्ड तक बनवा लिये हैं। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद राजनेता वोटबैंक के कारण कोई इन पर कार्यवाही नहीं करते। पिछली सरकार के एक मंत्री इन्हें स्थाई रूप से भारत की नागरिकता देने की वकालत करते रहे हैं। दु:खद पहलू यह है कि जो लोग इन्हें निकाल बाहर करने की वकालत करते थे वे सत्ता में आकर वे भी अब तक कुछ नहीं कर सके है।

इन्हें मानवता के आधार पर भारत में शरण देने के पक्षधरों से पूछा जाना चाहिए कि क्या राष्ट्रीयता का कोई अर्थ नहीं है? अगर नहीं तो फिर दुनिया के सभी देशों में पासपोर्ट वीजा क्यों? नागरिकता संबंधी इतने नियम क्यों? अगर आप मानवता के इतने पक्षधर है तो बताये कि आपके मन में आपने अपनी बस्ती में कूड़ा बीनने वाले बच्चों के लिए दया, ममता क्यों नहीं उमड़ती? आप उन बच्चो को अपनाये न परंतु कम से कम एक बच्चे की स्कूल फीस या अन्य खर्चे की जिम्मेवारी क्यों नहीं लेते? अपने देश के गरीबों, बेघरों, कर्ज से परेशान आत्महत्या करते किसानों और उनके बेसहारा बच्चों के लिए आपकी मानवता क्यों सो जाती है? बिना पूछे, बिना पासपोर्ट के चुपचाप आपके देश में चोर की तरह घुसने वाले कल इसी तरह आपके घर में घुसे तो क्या आप मौन रहोगे? तब आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी?

आश्चर्य है कि संयुक्त राष्ट्र संघ का एक अधिकारी भारत को इनकी मदद न करने के लिए कोसता है लेकिन अपने वीटों पावर प्राप्त देशों साधन संपन्न ब्रिटेन, अमरीका आदि को इन्हें अपने देशों में बसाने का निर्देश क्यों नहीं देता?

निसंदेह मानवता और धार्मिकता का महत्व है लेकिन राष्ट्रीयता स्वयं में एक आस्था है व राष्ट्र एक विशिष्ट पहचान। इतिहास साक्षी है कि हमसे अधिक मानवता, दया की कल्पना भी संभव नहीं है। हमने शत्रुओं तक पर दया दिखाकर बदले में धोखा खाया है। धर्म के आधार पर देश के बँटवारे के बावजूद हमने पंथनिरपेक्षता को अंगीकार किया। दुर्भाग्य की बात यह कि इस विषय पर हमें वे भी उपदेश देने की कोशिश कर रहे हैं जहाँ 70 वर्षों में अल्पसंख्यकों का प्रतिशत 20 से 2 पर पहुँच गया। जबकि हमारे यहाँ यह अनुपात औसत से अधिक बढ़ रहा है।

यह विडम्बना ही है कि भारत को मानवता सीखाने वाले म्यंमार हिंसा की प्रतिक्रिया में देश के कुछ स्थानों पर उन्मादी नारों संग हिंसक प्रदर्शन करते है। क्या उनकी मानवता की परिभाषा में अपनी माँगे मनवाने के लिए हिंसा करना जायज है? क्या देश को अपने मनमाने ढ़ंग से चलाने की कोशिश में लगे ये लोग यह नहीं जानते कि किसी भी राष्ट्र की प्रथम जिम्मेवारी अपने नागरिक हैं। स्वतंत्रता के 70 वर्षों बाद भी यहाँ सभी को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार सुनिश्चित नहीं कर सके हैं तो दूसरों की जिम्मेवारी क्यों और कैसे संभालें? क्या उन्होंने इस बात पर विचार किया कि दुनिया का सर्वाधिक अहिंसक समाज आखिर इतना उग्र क्यों हो गया कि रोहिंग्याओं का वहाँ रहना दूभर हो गया?

वे लोग जो भारत सरकार और यहाँ की जनता पर अनावश्यक दबाव बनाने में अपनी ऊर्जा खर्च कर रहे हैं, क्या उसका एक अंश उन लोगों को यह समझाने के लिए क्यों नहीं करते कि वे जहाँ भी रह रहे हैं, वहाँ के स्थानीय समाज के साथ समन्वय का अभ्यास बनायें। दूसरों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने और केवल स्वयं के विश्वास और मान्यताओं को ही ठीक और शेष सबको नकारने की मानसिकता को बदलने की उन्हें सीख क्यों नहीं दी जाती? उन्हें सीखाओं कि कोई भी धर्म राष्ट्र धर्म से बढ़कर नहीं हो सकता। निज धर्म के साथ-साथ राष्ट्र धर्म को भी अपने व्यवहार में लाना समय की माँग है। आखिर हमारा धार्मिक व्यवहार दुनिया के किसी दूसरे

शेष पृष्ठ 22 पर....

# श्री भक्तमाल कथा

**नई दिल्ली।** 10 से 16 सितंबर 2017। विश्व हिंदू परिषद के केन्द्रीय कार्यालय श्री संकट मोचन आश्रम (हनुमान मंदिर), आरकेपुरम् में साप्ताहिक श्री भक्तमाल की कथा का आयोजन दिव्यता के साथ चल रहा है। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की परम शिष्या साध्वी संपूर्णा जी अपनी सुमधुर वाणी में भारत के भक्तों की अनुपम भक्तिगाथा की संगीतमय प्रस्तुति कर रही हैं।

कथा के पंचम दिवस पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी कथा मंडप श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर पधारीं जहाँ उनका स्वागत विहिप के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री श्री चम्पतराय जी, संगठन महामंत्री श्री दिनेश जी, केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री जीवेश्वर जी मिश्र, श्री धर्मनारायण जी, श्री अशोक तिवारी जी, श्री कोटेश्वर जी द्वारा किया गया।

साध्वी जी ने अपने प्रवचन में मानवीय संवेदना और संस्कारों पर बल देते हुये अनाथालय, नारी निकेतन और वृद्धाश्रम की व्यवस्थाओं पर कुठाराघात करते हुये सनातनी परम्पराओं और संस्कारों को पोषित करने का संदेश देते हुये कहा कि हम भारतीयों के बच्चे तुलसी के पौधे हैं जिन्हें वासनाओं की शराबों से नही वरन संस्कारों के गंगा जल से सींचा जाना चाहिये। उन्होंने विहिप के द्वारा चलाये जा रहे मातृशक्ति और दुर्गावाहिनी के संस्कार केंद्रों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये ब्रह्मलीन प्रेरणापुंज अशोक सिंहल जी को स्मरण करते हुये उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

माननीय अशोक जी द्वारा ही 12-14 वर्षों पूर्व पितृ पक्ष में कथा का नियमित आयोजन प्रारम्भ कराया गया था। राम को पाना है तो वन्दे, खुद को बदलना होगा। अत्यंत मार्मिक भजन के साथ उन्होंने सबको आशीष प्रदान किया। कथा 16 सितम्बर को पूर्ण होगी, 17 को हवन, कीर्तन और भंडारे के साथ इस दिव्य अनुष्ठान की पूर्णता हुई।

विश्व हिन्दू परिषद केन्द्रीय कार्यालय
संकटमोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम,
सेक्टर-6, नई दिल्ली-22
दूरभाष: 011-26178992,
011-26103495, 09871672407
Website & http://www-vhp-org]
shreeramjanmabhoomi-org]
http://vhp-org/blogs/pravinbhaitogadia/

.....पृष्ठ 11 का शेष

बनाया। क्रमशः रामदेव जी इन सब विद्याओं में पारंगत हो गये। बालीनाथ जी योद्धा पुरुष थे इस कारण श्री रामदेव जी को क्षात्रत्व की शिक्षा अर्थात् तलवार, घुडसवारी, भाला, धनुष-बाण, कटार, ढाल आदि के साथ प्रहार-रोंध का भी समुचित ज्ञान कराया। नियमित अभ्यास के कारण रामदेव जी युद्धकला, योग शिक्षा, तंत्र-मंत्र शास्त्र में कुशल हो गये। गुरु बालीनाथ जी से सब प्रकार की शिक्षा व सिद्धियाँ प्राप्त करने के पश्चात् वे दोनों भाई पोकरण आ गये। कुछ दिन के पश्चात् शिष्य गुरु बालीनाथ के पास पहुँचकर कहने लगे कि गुरुदेव मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि अपना यह हिन्दू समाज मुस्लिम आक्रमणकारियों के अत्याचारों से त्रस्त है। आये दिन मन्दिर टूट रहे हैं, अनेक लोगों को बिना कारण कत्ल किया जा रहा है। बहन-बेटियों को उठाकर मुस्लिम बलात्कार कर रहे हैं। सरेआम गौ-हत्याएँ की जा रही हैं। हमारे कोई मूल्य सुरक्षित नहीं है। मानबिन्दुओं को ध्वस्त किया जा रहा है। सरेआम शास्त्रों की होली जलाई जा रही है। सन्तों के आश्रम नष्ट कर दिये हैं। अनेक लोग जंगलों में भाग गये है। बड़े-बड़े पुस्तकालय तक खाक कर दिये हैं। भारी मात्रा में धर्मान्तरण का दौर चल रहा है। दूसरी ओर हिन्दू समाज में ऊँच-नीच, भेदाभेद, छूत-अछूत का भारी रोग है इस कारण से भी तथाकथित पिछड़े बन्धु भी भारी मात्रा में धर्मान्तरित हो रहे हैं। श्रीगुरुजी मुझे लगता है कि समय की मांग है कि मैं समाज के पिछड़े, अछूत कहे जाने वाले लोगों में काम करूँ और हिन्दू समाज के भेदाभेद के रोग को मिटाकर समाज को समरस, एकात्म और संगठित बनाऊँ।

.....शेष अगले अंक में

# गौरी लंकेश हत्याकाण्ड : विरोध या सियासत

-लोकेन्द्र सिंह

वामपंथी पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या के बाद देश में जिस प्रकार का वातावरण बनाया गया है, वह आश्चर्यचकित करता है। नि:संदेह हत्या का विरोध किया जाना चाहिए। सामान्य व्यक्ति की हत्या भी सभ्य समाज के माथे पर कलंक है। समवेत स्वर में हत्याओं का विरोध किया जाना चाहिए। लेकिन, गौरी लंकेश की हत्या के बाद उठ रही विरोध की आवाजों से पत्रकार की हत्या के विरुद्ध आक्रोश कम वैचारिक राजनीति का शोर अधिक आ रहा है। आप आगे पढ़े, उससे पहले एक बार फिर दोहरा देता हूँ कि सभ्य समाज में हत्याएँ कलंक से अधिक कुछ नहीं। हत्या की निंदा ही की जा सकती है और हत्यारों के लिए कड़ी सजा की माँग। बहरहाल, लंकेश की हत्या के तत्काल बाद, बिना किसी जाँच पड़ताल के किसी राजनीतिक दल और सामाजिक-वैचारिक संगठन को हत्यारा ठहरा देने की प्रवृत्ति को क्या उचित कहा जा सकता है? पत्रकार और लेखक बिरादरी के लोग इस प्रकार के निर्णय देंगे, तब विश्वसनीयता के संकट से गुजर रही इस बिरादरी के प्रति अविश्वास का वातावरण और अधिक गहराएगा। इस प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप राजनीतिक कार्यकर्ता भी नहीं लगाते। भारत में असहमति के स्तर को हम कितना नीचे ले जाना चाहते हैं? बिना किसी पड़ताल के हम कैसे इस निर्णय पर पहुँच सकते हैं कि गौरी लंकेश की हत्या उनके लिखने-पढ़ने और बोलने के कारण हुई है। क्या हत्या के और कोई कारण नहीं हो सकते? यदि हम लंकेश के भाई को सुने, तब हत्या के दूसरे कारण भी नजर आएंगे। उनके भाई ने तो हत्या में नक्सलियों के शामिल होने का संदेह जताया है।

मीडिया में जिस तरह के शीर्षक (भाजपा विरोधी पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या) से लंकेश की हत्या की खबरें चलाई जा रही हैं, वह यह बताने में काफी हैं कि पत्रकारिता की आड़ में कौन-सा खेल खेला जा रहा है? भला, 'भाजपा विरोधी पत्रकार' पत्रकारिता में कोई नयी श्रेणी है क्या? जब संपादक मान रहे हैं कि गौरी लंकेश भाजपा विरोधी थीं, तब वह पत्रकार कहाँ रह गईं? यह तो पक्षकारिता है। उनकी पत्रिका 'लंकेश पत्रिके' और सोशल मीडिया पर बयान उनके शब्दों को पढ़कर साफ समझा जा सकता है कि वह भाजपा, आरएसएस और

राष्ट्रीय विचारधारा की घोर विरोधी थीं, जबकि कम्युनिस्ट विचारधारा की कट्टर समर्थक थीं। उन्होंने अपने एक ट्वीट में बेहद दु:ख प्रकट किया है- ''कॉमरेड! हमें 'फेक न्यूज' और आपस में एक-दूसरे को 'एक्सपोज' करने से बचना होगा।'' इसी प्रकार एक दूसरे ट्वीट में उन्होंने कहा है- ''मुझे ऐसा क्यों लगता है कि हम आपस में ही लड़ रहे हैं, जबकि हमारा 'दुश्मन' हमारे सामने हैं, हमें उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।'' गौरी लंकेश के इन दो ट्वीट से ही उनकी निष्पक्षता और एजेंडा उजागर हो रहा है। उनका एकमेव ध्येय था- किसी भी प्रकार भाजपा-आरएसएस एवं राष्ट्रीय विचारधारा को लांछित करना।

भाजपा के विरुद्ध द्वेषपूर्ण और मानहानिकारक लेखन के लिए गौरी लंकेश को माननीय न्यायालय छह माह के कारावास की सजा भी सुना चुका है। साफ है कि गौरी लंकेश एक एजेंडे के तहत तथ्यहीन खबरें भी अपनी पत्रिका में प्रकाशित करती थीं। अब वही काम उनकी हत्या के बाद उनकी विचारधारा के दूसरे 'पत्रकार बंधु' एवं लेखक कर रहे हैं। चूँकि गौरी लंकेश वामपंथ की समर्थक थीं और वह भाजपा-संघ के विरुद्ध द्वेषपूर्ण करती थीं, इसलिए देश में उनकी हत्या पर इस कदर हंगामा मच गया है। देश में पिछले 25 वर्ष में 27 पत्रकारों की हत्या हो चुकी है, लेकिन ऐसा विरोध कभी हुआ नहीं। अभी तीन वर्षों में ही बड़ी घटनाओं को देखें तो 2015 में उत्तरप्रदेश में पत्रकार जगेंद्र सिंह और मध्यप्रदेश में संदीप कोठारी को जिंदा जला दिया था। वर्ष 2016 में बिहार के राजदेव रंजन और धर्मेंद्र सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी थी। एक भी हत्या के विरुद्ध दिल्ली के प्रेस क्लब में मीडिया के

स्वनामधन्य पत्रकारों का जुटान हुआ क्या? पत्रकारों की सुरक्षा के लिए क्या इस प्रकार की मुहिम चलाई गई? मतलब साफ है कि यह जो पीड़ा दिख रही है, पत्रकार की हत्या की पीड़ा नहीं है। यह साफतौर पर 'हत्या पर सियासत' की नयी परिपाटी है। किसी भी प्रकार के पत्रकारों की चिंता है तब भी हमें गौरी लंकेश की हत्या का जबरदस्त विरोध करना चाहिए था।

हम सबको अपने विरोध से कर्नाटक की कांग्रेस सरकार पर दबाव बनाना चाहिए था कि जल्द से जल्द जाँच अपने अंजाम तक पहुँचे, सीसीटीवी में कैद हत्यारे जल्द सलाखों के पीछे दिखाई दें और हत्या के वास्तविक कारणों का भी खुलासा जल्द हो। किंतु, विरोध में यह तीनों ही प्रमुख माँग अनुपस्थित दिखाई दे रही हैं। गौरी लंकेश की हत्या बेंगलूरू में हुई है। राज्य में कांग्रेस की सरकार है। ऐसे में कर्नाटक की कांग्रेस सरकार को घेरने की जगह हत्या का दोष केंद्र सरकार को देना, किस ओर इशारा करता है? कर्नाटक में कानून व्यवस्था ठीक नहीं है। गौरी लंकेश की तरह वहाँ भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं के साथ ही सरकारी अफसरों की भी हत्याएँ हो रही हैं। 14 मार्च, 2017 को बोम्मानहाली म्युनिसिपल काउंसिल के भाजपा सदस्य और दलित नेता श्रीनिवास प्रसाद उर्फ कीथागनहल्ली वासु की बेंगलुरू में हत्या कर दी गई। एक दलित नेता की हत्या पर कहीं कोई बड़ा प्रतिरोध दर्ज नहीं कराया गया, सिर्फ इसलिए क्योंकि श्रीनिवास प्रसाद भाजपा के नेता थे? इसी तरह 22 जून, 2017 को बेल्लारी में दलित नेता और जिला एसटी मोर्चा के अध्यक्ष बांदी रमेश की गुंडों ने हत्या कर दी। 16 अक्टूबर, 2017 को आरएसएस के कार्यकर्ता रुद्रेश की दिन-दहाड़े दो बाइकसवार गुंडों ने हत्या कर दी थी। बीते दो सालों में कर्नाटक में भाजपा, आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद के 10 नेताओं की हत्या हुई है। लेकिन, हमारा मीडिया और तथाकथित मानवतावादी वर्ग सोया पड़ा रहा। वह अपनी वैचारिक सियासत के लिए लंकेश की हत्या का इंतजार कर रहा था। यह जो चयनित विरोध और प्रोपोगंडा हो रहा है, वह सभ्य समाज के लिए ठीक नहीं। समाज स्वयं भी इसका मूल्यांकन कर रहा है। बहरहाल, यदि हम शांति चाहते हैं और लोकतंत्र में वैचारिक असहमतियों को सुरक्षा प्रदान करना चाहते हैं, तब हमें ढोंग बंद करना होगा। वैचारिक हत्याओं के विरोध में जब तक समवेत स्वर बुलंद नहीं होगा, तब तक समाधान नहीं। बाकि, जिनको 'हत्या पर सियासत' करनी है, कर ही रहे हैं।

कामरेड गौरी लंकेश की हत्या के बाद राजनीतिक रंग ले चुके विरोध प्रदर्शन और बहस के बीच बहुत से जरूरी सवाल आम समाज से लेकर बौद्धिक जगत में जवाब माँग रहे हैं। यह सवाल ऐसे नहीं है, जिन्हें यह कह कर खारिज किया जाए कि इनका औचित्य क्या है? लंकेश के समर्थन में प्रारंभ हुई मुहिम को कमजोर करने के लिए पूछे जा रहे हैं यह सवाल, ऐसा कह कर भी उन्हें टाला नहीं जा सकता। आखिर, सवालों से कोई मुहिम कमजोर कैसे और कब हो सकती है? सवाल ही तो हैं, जो मुहिम की बुनियाद में होते हैं। सवाल ही तो होते हैं, जिनके जवाब खोजने के लिए लोग आवाज बुलंद करते हैं। इसलिए सवालों की उपेक्षा किसी भी सूरत में नहीं करनी चाहिए। अब सवाल देखिए और उनके जवाब खुद ही तलाशिए, क्योंकि लंकेश की हत्या पर सियासत कर रहे लोग इन सवालों के जवाब नहीं देंगे।

1. जब गौरी लंकेश का भाई इंद्रजीत ही टाइम्स ऑफ इंडिया और एनडीटी सहित अन्य मीडिया संस्थानों से बातचीत में बार-बार कह रहा है कि पिछले कुछ दिनों में नक्सलियों से गौरी को धमकी भरे पत्र मिले थे। चूँकि गौरी नक्सलियों को मुख्यधारा में लाने की मुहिम की अगुवाई कर रही थीं, कुछ नक्सलियों को मुख्यधारा से जोडने में वह सफल भी हुई थीं, जिसकी वजह से वह नक्सलियों के निशाने पर थीं और उन्हें लगातार धमकी भरी चिट्ठी और ईमेल आते थे। उनके भाई की चिंता सही भी है। हम जानते हैं कि जासूसी और गद्दारी के शक मात्र में नक्सली संदेही के पूरे परिवार तक को जिंदा जला देते हैं। गौरी के आखिरी ट्वीट भी इशारा कर रहे हैं कि कामरेडों के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा था। फिर क्यों, पत्रकारों ने गौरी की हत्या का आरोपी नक्सलियों को नहीं बनाया?
2. गौरी लंकेश पहली पत्रकार नहीं है, जिनकी हत्या की गई है। कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स (सीपीजे) की एक रिपोर्ट के मुताबिक 1992 से 2017 के बीच

40 पत्रकारों की हत्या की गई है। 39 पत्रकारों की हत्या पर इतना आक्रोश प्रकट क्यों नहीं हुआ? क्या लंकेश की हत्या का इंतजार किया जा रहा था? या फिर पहले मरने वाले पत्रकार हिंदी और अन्य भारतीय भाषा के पत्रकार थे। या फिर यह महानगरों में पत्रकारिता नहीं करते थे, बल्कि क्षेत्रीय स्तर के पत्रकार थे। या फिर इसलिए कि इनके वैचारिक पक्ष की जानकारी पत्रकारों को नहीं हो सकी थी?

3. गौरी लंकेश की हत्या कर्नाटक के प्रमुख शहर बेंगलूरू में हुई। कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है और सिद्धारमैया मुख्यमंत्री हैं। जिस तरह खुलेआम लंकेश की हत्या हुई, उसके लिए कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से सवाल क्यों नहीं पूछे जा रहे? लचर कानून व्यवस्था के लिए राज्य सरकार को कठघरे में खड़ा करने की जगह केंद्र सरकार पर हमला क्यों बोला जा रहा है? क्या सिर्फ इसलिए कि कर्नाटक सरकार पर हमला बोलने से वैचारिक स्वार्थ पूर्ति नहीं हो पाएगी? हत्या का विरोध असल मकसद नहीं है, बल्कि सियासत करन पहला उद्देश्य है।
4. गौरी लंकेश की हत्या को कलबुर्गी से जोडने के लिए एक जैसे हथियार की थ्योरी खोजकर लाने वालों ने कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से यह पूछने की जहमत क्यों नहीं उठाई कि कलबुर्गी के हत्यारों का क्या हुआ? दो साल से अधिक समय कांग्रेस सरकार को हो गया, इसके बाद भी कलबुर्गी के मामले का पटाक्षेप नहीं हो पाया। अब तक हत्यारे खुले क्यों घूम रहे हैं?
5. पत्रकार, कम्युनिस्ट लेखक-विचारक एवं अन्य राजनीतिक दलों ने बहुत जल्दी में निर्णय क्या इसलिए सुना दिया ताकि वास्तविक तथ्यों/प्रश्नों पर पर्दा डाला जा सके? क्या यह कोई नेटवर्क है, जो किसी खास प्रकार की घटनाओं पर अत्यधिक तेजी से सक्रिय होता है, जबकि केरल में असहमति और वैचारिक भिन्नता के आधार पर लगातार हो रहीं हत्याओं पर पर्दा डालने का प्रयास करता है?
6. गौरी लंकेश की हत्या के विरोध में प्रेस क्लब में पत्रकारों द्वारा आहूत प्रदर्शन क्या वास्तव में पत्रकारों का आयोजन था? यदि यह पत्रकारों का आयोजन था, तब मंच पर धर्मांतरण में संलिप्त ईसाई संस्था, कम्युनिस्ट और कांग्रेस नेता क्या कर रहे थे? भाजपा के नेताओं को क्यों नहीं बुलाया गया? जबकि भाजपा के नेताओं ने भी लंकेश की हत्या की निंदा की है और कर्नाटक सरकार से माँग की है कि जल्द से जल्द हत्यारे पकड़े जाने चाहिए।
7. गौरी लंकेश की हत्या के विरोध में दिल्ली प्रेस क्लब में जब सभा चल रही थी, तभी जेएनयू की छात्रनेता ने 'द पब्लिक' टीवी चैनल के पत्रकार के साथ न केवल बदतमीजी की, बल्कि उन्हें वहाँ से भगा दिया। अभिव्यक्ति की आजादी, सहिष्णुता और पत्रकारिता की रक्षा के स्वयंभू ठेकेदारों की उपस्थिति में यह सब होता रहा, लेकिन किसी ने प्रतिरोध नहीं किया। तब भी नहीं किया और अभी भी नहीं कर रहे। पत्रकारों के लिए ही चिह्नित स्थान पर एक छात्रनेता पत्रकार को ही घुसने से रोक देती है और हमारे स्वनामधन्य पत्रकार देखते रहते हैं? वहाँ पत्रकारिता के हितों की बात हो रही थी या एक विचारधारा की पैरवी?
8. एक 'अनधिकृत व्यक्ति' की टिप्पणी के आधार पर हमने एक पूरी विचारधारा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कठघरे में खड़ा कर दिया। लेकिन, अब हम 'अधिकृत व्यक्तियों' की गाली-गलौज की भाषा को उनका व्यक्तिगत विचार मान रहे हैं। यह दोहरा आचरण क्या हमारी निष्पक्षता और नैतिकता को उजागर नहीं करता है? हम दधीची नाम के व्यक्ति द्वारा उपयोग किए गए असभ्य शब्द को लेकर दुनिया भर में घूम रहें, लेकिन क्या हमें गौरी लंकेश के द्वारा उपयोग किए गए शब्दों, विश्लेषणों और चित्रों को भी जनता के सामने नहीं रखना चाहिए? वह जिस प्रकार संघियों की पैदाइश और उनकी को परिभाषित एवं श्रेणीकरण कर रही थीं, क्या गौरी का तरीका और संवाद का स्तर उचित था? क्या वह प्रगतिशील भाषा का संस्कार था?
9. गौरी लंकेश हत्याकांड पर हमने जिस प्रकार की रिपोर्टिंग की है। उसे देखकर क्या हमें पुनः विचार

शेष पृष्ठ 24 पर....

# नान्दल खाप तपा बोहर

## आज से मुला शब्द का प्रयोग जाटों के साथ नहीं होगा

**10 सितंबर।** नान्दल खाप के प्रमुख ओमप्रकाश नान्दल ने आज आयोजित सर्वखाप पंचायत के अध्यक्ष पद से अपने विचार करते हुए कहा जाटो के मध्य सामाजिक समरसता के लिये हमें विघटित करने वाले शब्दों को समाप्त करना ही पड़ेगा तभी सबका भला होगा। मूले शब्द की समाप्ति समय की आवश्यकता है।

नान्दल भवन, बोहर में आयोजित खाप पंचायत जिसमें लगभग सभी खापों की पंचायते शामिल हुई जिसमें प्रमुख रूप से अहलावत खाप से मांगे राम, मलिक खाप से प्रधान चौ. बजलीत सिंह, दहिया खाप से प्रधान महावीर सिंह, अंतिल खाप से हवा सिंह, महम चौबीसी से रामफल राठी, सांगवान खाप से ऋषिपाल, आजाद सिंह मतलौड़ा, स्वामी कर्मपाल, रामफल सिंह दोहवा, पंचगामा प्रधान रोशनलाला, स्वामी सोमपाल खड़ावड़ सहित लगभग 800 लोगों के पंचायत में भाग लिया जिसमें उपरोक्त बिन्दु मुला शब्द हटाने पर विस्तृत विचार विमर्श हुआ तथा अंत में की ध्वनि से प्रस्ताव पास कर मुला शब्द का निषेध किया गया कि भविष्य में मुला शब्द का प्रयोग किसी भी स्थिति में जाटों के लिए नहीं किया जायेगा। खापों की पंचायत ने सर्वसम्मत यह कहा कि हम परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार करेंगे। भाईचारा अपनायेंगे तथा हम सब जाट एक हैं और एक रहेंगे।

धर्मप्रसार हरियाणा के अध्यक्ष सतबीर सिंह ने सभा का संचालन किया। राष्ट्रीय मंत्री जुगलकिशोर ने अपने संबोधन में कहा कि आज इस क्षेत्र में एक नए युग का

शुभारंभ हो रहा है जिससे सभी प्रकार की असमानता समाप्त होकर हिन्दू संस्कृति मजबूत होगी।

सभा को खाप प्रतिनिधियों के अलावा धर्मप्रसार के केन्द्रीय मंत्री महेन्द्र सिंह, अध्यक्ष स्वदेशपाल जी गुप्ता तथा प्रदेश मंत्री थानमल जी शर्मा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम की सारी व्यवस्था सतीश नान्दल ने संभाली तथा सहयोगी के रूप में रमेश राघव, सुरेन्द्र बंसल, राज परमार, अमित, विजय, विनोद, यज्ञदत्त, आशीष थे। पंचायत से पहले यज्ञ का आयोजन किया गया जिसे श्रीकृष्ण शास्त्री ने संपन्न करवाया।

**ओम प्रकाश नान्दल**
**विनोद श्रीवास्तव**
प्रदेश कार्यालय प्रमुख
विश्व हिन्दू परिषद हरियाणा
मो0-8059381456

❑

.....पृष्ठ 17 का शेष

कोने से क्यों संचालित हो? उसका वहाँ की परिस्थितियों के अनुसार समन्वय क्यों न हो? यह सभी को समझना ही चाहिए कि किसी राष्ट्र का धार्मिकरण करने की सोच को त्याग कर अपने धर्म का राष्ट्रीकरण करना ही मानवता का विस्तार है। यदि हमारी धार्मिकता हमें आत्मकेन्द्रित बनाती है तो यह निश्चित है कि हम धर्म के संकुचित अर्थों से बँधे हैं। यदि म्यंमार के रोहिंग्या शरणार्थी और उनके भारतीय समर्थक अपने व्यवहार को मानवता के अनुकूल बना ले तो उन्हें कभी भी विस्थापित होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। समय की माँग है कि सभी को कट्टरपंथी लोगों से दूरी बनाते हुए स्वयं को आधुनिक शिक्षा और राष्ट्रधर्म से जोड़ना चाहिए। यही मानवता है, यही क्र धार्मिकता है और यही राष्ट्रीयता है। इसके विपरीत आचरण अस्वीकार्य है।

vinodbabbar@gmail.com

# कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने प्रमोद कुमार बाजपेई की महाराजा अग्रसेन कॉलेज, जगाधारी में प्रिंसिपल पद पर नियुक्ति के लिए दी गई अनुमति को वापिस लिया

महाराजा अग्रसेन कॉलेज (सह शिक्षा), जगाधारी (हरियाणा) के प्रिंसिपल प्रमोद कुमार बाजपेई ने इस पद पर नियुक्त होने के लिए, उसके विरुद्ध उदयपुर (राजस्थान) में यौन शोषण के गंभीर अपराध में चल रहे फौजदारी मुकदमे के तथ्य जानबूझकर छिपाए थे, जबकि राजस्थान महिला आयोग ने अपने एक निर्णय में यह पारित किया था कि प्रमोद कुमार बाजपेई को किसी ऐसे पद पर ना नियुक्त किया जाये जहाँ उसका संपर्क महिलाओं के साथ आये, क्योंकि वह महिलाओं के प्रति गन्दी मानसिकता का रोगी है, जिस पर श्री जी डी गुप्ता, अधिवक्ता, ने मामले की तह में जाकर सारे तथ्य एकत्र किये व विभिन्न सबूतों को कॉलेज प्रबंधन, यूनिवर्सिटी, शिक्षा विभाग व हरियाणा सरकार की जानकारी में आवश्यक कार्यवाही हेतु ला दिया, परन्तु प्रमोद कुमार बाजपेई की पहुँच व जोड़-तोड़ के कारण किसी ने कोई कार्यवाही ना की। अंत में श्री जी डी गुप्ता इस मामले में पंजाब व हरियाणा हाईकोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की, जिस पर माननीय हाईकोर्ट ने निदेशक, उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा को याचिकर्ता के प्रतिवेदन पर जाँच कर आदेश पारित करने के निर्देश दिए थे। जिस पर निदेशक, उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा ने सभी पक्षों की निजि सुनवाई करके व सारे तथ्यों के मद्देनजर, प्रिंसिपल प्रमोद कुमार बाजपेई को अपने खिलाफ चल रही आपराधिक कार्यवाही के तथ्य छिपाकर धोखे से नौकरी पाने का दोषी पाते हुए कॉलेज के प्रधान देस राज गोयल को प्रिंसिपल प्रमोद कुमार बाजपेई के विरुद्ध तुरंत नियमानुसार उचित कार्यवाही करके सरकार को सूचित करने के आदेश पारित किये थे और निदेशक, उच्तर शिक्षा विभाग, हरियाणा ने उच्च न्यायालय में ये वचन दिया था कि वे इस मामले को तार्किक अंत तक पहुँचाने के लिए गंभीरता से उचित प्रयास करेंगे! कॉलेज की प्रबंधक समिति ने प्रिंसिपल प्रमोद कुमार बाजपेई को चार्जशीट किया और जाँच समिति का गठन किया! लेकिन बाजपेई को बचाने के लिए ढीली-ढाली तथा दिखावटी कार्यवाही ही की!

श्री जी डी गुप्ता द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र को उच्च नयायालय व निदेशक, उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा के आदेशो की प्रतियाँ भेजने पर, विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने मामले को गंभीरता से लेते हुए प्रमोद कुमार बाजपेई की प्रिंसिपल पद पर नियुक्ति के लिए वर्ष 2011 में दी गई अनुमति को वापिस ले लिया तथा प्रबंधक समिति को सूचित किया कि अब से प्रमोद कुमार बाजपेई को विश्वविद्यालय द्वारा कॉलेज के प्रिंसिपल के रूप में मान्यता नहीं दी जाएगी इस पर प्रमोद कुमार बाजपेई ने विश्वविद्यालय के कुलपति, राज्यपाल को एक निवेदन पत्र भेजा, जिस पर विश्वविद्यालय ने 5 उच्च शिक्षित अधिकारियों की एक जाँच समिति गठित की, जिसने सभी पक्षों को सुनकर तथा सभी दस्तावेजों का अवलोकन करके अपनी रिपोर्ट में कहा कि प्रमोद कुमार बाजपेई द्वारा प्रिंसिपल के पद पर नियुक्ति के लिए दिए गए अपने प्रार्थना पत्र में अपने विरुद्ध चल रहे यौन शोषण के मुकदमें के तथ्यों को छुपाये जाने का आरोप झुठलाया नहीं जा सकता! जाँच समिति की रिपोर्ट विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद् ने भी पारित कर दी और अब उपकुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय द्वारा अपने 6.8.2016 के पत्र द्वारा प्रमोद कुमार बाजपेई की प्रिंसिपल के पद पर नियुक्ति की अनुमति वापिस लिए जाने को ठीक मानते हुए उसे अंतिम रूप दे दिया!

**किसी शायर ने कहा है, 'बहुत निकले मेरे अरमान, मगर कम निकले!' बड़े बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले!**

**-जी.डी. गुप्ता**
एडवोकेट डिस्ट्रीक्ट कोर्ट जगाधारी, हरियाणा
मोबाईल- 09896015830

# अखाडा परिषद् द्वारा जारी सूची-जो संत नहीं हैं-समुचित स्तर पर हस्तक्षेप हेतु

समाचार पत्रें में 11 सितम्बर को प्रकाशित समाचार के बारे में पता लगा, जिसमें अखाड़ा परिषद् ने कुछ तथाकथित संतों के नाम देकर यह घोषणा की है कि परिषद् इन्हें संत नहीं मानती। पेपर कटिंग संलग्न है। यह बहुत ही दुखद व दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक तेजस्वी योद्धा संन्यासी, जिसने सम्पूर्ण जीवन देश के पिछड़े-निर्धन जनजाति समाज में लगाया, उन्हें धर्मान्तरण से मुक्त करने हेतु सफल प्रयोग-प्रयास किए, समरसता क्या होती है- अपने जीवन से दिखाया, उसे राम-रहीम, राधे माँ, निर्मल बाबा, नारायण साईं, रामपाल जैसे चरित्रहीन, मक्कार लोगों के साथ जोड़ दिया गया।

उनका, बस्तर, अंडमान, डांग में बिताया गया जीवन, तपस्या, देश हित में किये गए सफल प्रयास किसी ने भी अखाड़ा परिषद् में इस तरफ ध्यान नहीं दिलाया?

जो काम सोनिया गाँधी, शिंदे, चिदम्बरम् व चर्च की सम्पूर्ण शक्ति मिलकर भी गत एक दशक में नहीं कर सके वह राष्ट्र-घातक कार्य इस एक निर्णय ने कर दिया।

कांची-कामकोटी पीठ के पू. शंकराचार्यजी को भी तमिलनाडु की निरंकुश सरकार ने दीपावली की पूर्व संध्या पर निरुद्ध कर-कारावास में डाला था, उन पर फर्जी मुकदमा हत्या का चलाया, उन के चरित्र की हत्या करने के सभी प्रयास हुए, परन्तु न्यायालय ने उन्हें सम्मानपूर्वक रिहा किया। क्या उनके बारे में हम या अखाड़ा परिषद् ऐसी कल्पना भी कर सकती थी?

यदि हमने इसमें समय रहते सम्पूर्ण शक्ति से हस्तक्षेप नहीं किया और समुचित तथ्यों से अखाड़ा परिषद् को अवगत कराकर असीमानंदजी को इस कलंक से मुक्त नहीं करवाया तो इतिहास में जाने-अनजाने हम भी इस दुष्कृत्य मेंसम्मिलित तो नहीं मानें जाएँगे?
कृपया इस पर सावधानी से - त्वारितरूप से विचार करें, यही अनुरोध है।

**-विष्णु कान्त**

---

.....पृष्ठ 21 का शेष

नहीं करना चाहिए कि हम पत्रकारिता कर रहे हैं या विचारधाराओं के समर्थक एवं विरोध बन कर पक्षधरिता कर रहे हैं? रिपोर्टिंग का पहला सिद्धांत है, निष्पक्षता। हमें अपनी रिपोर्ट में कुछ भी लिखने-बताने से पहले गहराई से पड़ताल नहीं करनी चाहिए थी? तथ्यों को कसौटी पर नहीं कसा जाना चाहिए था?

10. गौरी लंकेश की लिखने-पढ़ने को पत्रकारिता की श्रेणी में रखा जाना चाहिए या नहीं? क्या पत्रकारिता को पुनः परिभाषित करने का समय आ गया है? क्योंकि, यह तो लगभग सभी मान रहे हैं कि वह भाजपा और आरएसएस की न केवल कट्टर विरोधी थीं, बल्कि वैसा ही लेखन भी करती थीं। 'गोदी मीडिया' को परिभाषित करने वाले लोग इस प्रकार की पत्रकारिता को क्या नाम देंगे? क्योंकि यह भी सहज पत्रकारिता तो नहीं है।

बहरहाल, प्रश्न भले ही वाजिब हों लेकिन किसी की हत्या को संदेह के घेरे में खड़ा नहीं किया जा सकता। प्रत्येक सूरत में हत्या का पुरजोर विरोध किया जाना चाहिए। भले ही वह आपका घोर विरोधी रहा हो, आपके लिए अमर्यादित भाषा-शैली का उपयोग करता रहा हो। गौरी लंकेश के सोशल मीडिया प्रोफाइल के मुताबिक भले ही उन्होंने केरल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की हत्या पर 'स्वच्छ केरल' का संदेश प्रसारित किया हो, लेकिन इस आधार पर किसी ओर को 'स्वच्छ कर्नाटक' हैसटैग चलाने का अधिकार नहीं मिल जाता है। बस्तर में नक्सलियों के हाथों 76 जवानों की हत्या पर 'पार्टी' का आयोजन करने वाले उचित ही कह रहे हैं कि गौरी लंकेश की हत्या पर खुशी जाहिर कर रहे लोग बेशर्म हैं। निश्चित तौर पर यह स्वस्थ परंपरा नहीं है। बहरहाल, गौरी लंकेश की हत्या के बाद कर्नाटक ही नहीं, अपितु पूरे देश में जिस प्रकार का राजनीतिक वातावरण बनाया गया है, उसने एक बार फिर देश में बनावटी असहिष्णुता का माहौल बना दिया है। हालाँकि, इस माहौल में एक बार फिर कम्युनिस्ट नेटवर्क का खुलासा हो रहा है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

# विहिप द्वारा आयोजित क्रांतिकारियों के दशहरा घाट (ताजगंज) तर्पण श्राद्ध कार्यक्रम

**आगरा**-20 सितंबर तर्पण का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक अर्थ है तर्पण आत्माओं को तृप्त करता है जो अतृप्त रहती हैं यह एक पवित्र एवं दायित्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान है उक्त विचार व्यक्त करते हुए ब्रज प्रांत प्रचारक डॉ. हरीश रौतेला ने विहिप द्वारा आयोजित क्रांतिकारियों के दशहरा घाट (ताजगंज) तर्पण श्राद्ध कार्यक्रम में व्यक्त किए।

प्रांत प्रचारक ने अपने उद्‌बोधन क्रांतिकारी/वीर सावरकर सहित कई क्रांतिकारियों को स्मरण करते हुए बताया कि तर्पण और आत्माओं की तृप्ती के लिए भी आवश्यक है जिनका किसी कारणवश तर्पण नहीं होता है। तर्पण न होने से आत्माएं भटकती रहती हैं इस संबंध में राजस्थान के कुछ मामलों का उदाहरण भी दिया जिनके तर्पण के बाद उन घटनाओं में भारी कमी महसूस हुई जो तर्पण के पूर्व थी बृहद शहीदों के तर्पण कार्यक्रम को विहिप के प्रांत संगठन मंत्री मनोज कुमार ने कहा कि जिस धार्मिक कार्यक्रम को आज प्रारंभ किया है आगामी वर्षों में भी अनवरत रूप से चलाया जाएगा जिन शहीदों ने राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा के अपने प्राणों को न्योछावर किया उनकी आत्मा की शांति के लिए वह अपने दायित्व का पालन करेगी तर्पण श्राद्ध कार्यक्रम की अध्यक्षता स्क्वॉड्रन लीडर एमपीएस ग्रुप के चेयर पर्सन श्री ए. के. सिंह ने की।

तर्पण कार्यक्रम में रानी पक्षालिका विधायक बाह, मंडलायुक्त आगरा श्री के. राम. मोहन राव तथा जिलाधिकारी आगरा गौरव दयाल की उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

दोनों प्रशासनिक अधिकारियों ने विहिप के उक्त कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए विहिप को साधुवाद व्यक्त किया तथा कार्यक्रम के उद्देश्य पर सकारात्मक संदेश के साथ शहीदों के प्रति अर्पित सम्मान से विहिप अपने कर्तव्य का पालन कर रही है इसके लिए वह बधाई की पात्र है।

समारोह का संचालन राजीव शर्मा ने किया समारोह से पहले ब्राह्मणों द्वारा तर्पण वैदिक रीति से संपन्न कराया गया मुख्य यजमान राजीव शर्मा, दीपक अग्रवाल, राजेंद्र गर्ग, मदन वर्मा, योगेश वर्मा, गजेंद्र बघेल, प्रतिभा गर्ग व आदि थे।

15 ब्राह्मणों के द्वारा तर्पण कराया गया जो विशेष तौर पर वृंदावन, मथुरा से बुलाये गए थे कार्यक्रम में प्रमोद चौहान, विजय शिवहरे, प्रमोद गुप्ता, सतेन्द्र बरुआ (प्रान्त सह-संयोजक) गोविन्द जी समारोह में मुख्य रूप से उपस्थित थे सुरेंद्र चौधरी, दिग्विजय नाथ तिवारी, सुनील दुबे, नवल तिवारी, सौरभ गुप्ता, धर्मेंद्र अवस्थी, बंटी ठाकुर, दिग्विजय दोनेरिया, अनूप वर्मा, अनुपम पंडित, योगेश निगम, संतोष कटारा, गोविंद पाराशर, रवि दुबे, अनुराग उपाध्याय, आशुतोष दीक्षित, जितेन्द्र, रामकुमार राठौर, अभिषेक वर्मा उपस्थित थे समारोह के उपरांत हजारों लोगों ने प्रसादी पाई।

**-भारतेंदु शर्मा**
प्रान्त कार्यालय प्रमुख
बृज प्रान्त (आगरा)

❑

.....पृष्ठ 13 का शेष

खिलवाड़ करके उनका उत्पीडन करना क्या न्यायसंगत है? क्या राजनीति शास्त्र के ज्ञाता इसको मान्यता देंगे?

क्या यही राष्ट्रवादी लोगों का राजनैतिक दर्शन है? हमारे राजनेताओं को भारतीय संस्कृति का ज्ञान अवश्य होना चाहिये जिससे भविष्य में वह सत्य मार्ग पर चल कर समाजिक व राष्ट्रीय हित के रक्षार्थ राजनीति कर सकें। आज राष्ट्र के सामने एक बड़ा प्रश्न है कि राजनीति को राष्ट्रनीति बनाने वाले योगिराज श्रीकृष्ण, महात्मा विदुर और आचार्य चाणक्य की भूमि पर उनके समान समर्पित निस्वार्थ राजनीतिज्ञों का अभाव कब तक बना रहेगा?

**-विनोद कुमार सर्वोदय**
(राष्ट्रवादी चिंतक एवं लेखक)
गाजियाबाद

# महाराजा बलबंत सिंह के 165वें जन्मोत्सव पर विचारगोष्ठी का आयोजन

नवरात्री के प्रथम दिन माँ सरस्वती के मन्दिर में महाराजा बलबंत सिंह के 165वें जन्मोत्सव पर आर.बी.एस.कॉलेज में विचारगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें उनके जीवन पर कुछ बिंदु समाज के सामने रखने का अवसर मिला 1885 में शिक्षा के उत्थान के लिए एक हजार एकड जमीन और नौ लाख रूपये दिए। एजुकेशन ट्रस्ट की नींव रखी। आज एशिया का सबसे बड़ा कॉलेज महाराजा बलबंत सिंह के नाम पर है।

मुद्दा–देश को शिक्षा विहीन यूरोप के लोंगो ने व इस्लाम ने किया भारत में पाँच मूल भूत आवश्यकता के केंद्र प्रत्येक गाँव में थे।

1–पाठशाला 2–भोजनशाला 3–यात्रेशाला 4–व्यायाम शाला 5–गौशाला

इन्ही पाँचों केन्द्रों पर इसाई और इस्लाम का आक्रमण हुआ और हम शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ गये महाराजा बलवंत सिंह ने शिक्षा के क्षेत्र में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक दीप जलाया।

कार्यक्रम में महाराज बलवंत सिंह के वंश से युवराज अम्बरीश पाल, एत्मादपुर के विधायक रामप्रताप सिंह, बायी. पी. सिंह, कर्नल एस.पी.सिंह साथ रहे। ❑

# श्रद्धांजलि

अयोध्या (16 सितंबर) श्रीराम जन्मभूमि न्यास तथा विहिप ने निर्मोही अखाड़ा के सरपंच और श्रीराम जन्मभूमि विवाद मे पक्षकार वयोवृद्ध महंत भाष्कर दास के निधन पर अपनी संवेदना प्रकट करते हुये इसे धार्मिक जगत को गहरा अघात बताया ।

विहिप मीडिया सेन्टर से जारी बयान मे श्रीराम जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष और मणिराम दास छावनी के श्रीमहंत नृत्य गोपाल दास महाराज ने दुख व्यक्त करते हुये कहा महाराज भाष्कर दास जी का साकेतवास धार्मिक सामाजिक जीवन की क्षति है। संत महापुरुषों का अवतरण ही लोक कल्याण के लिये होता है। राम जन्मभूमि की लड़ाई में सभी हिन्दू पक्ष एक है। भाष्कर दास जी की न्यायालय की विधिक लड़ायी में उनका सहयोग अतुलनीय है।

विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री चम्पतराय ने वयोवृद्ध संत के निधन को अपूर्णीय क्षति बताते कहा श्रीराम जन्मभूमि के न्यायिक संघर्ष में भाष्कर दास जी का सहयोग सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने कहा सहृदयि और मृदुलभाषी व्यक्तित्व के धनी महाराज जी का सान्निध्य सदैव स्मरणीय रहेगा।

विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री संगठन दिनेशचन्द ने अपनी संवेदना में कहा माननीय अशोक सिंहल जी के साथ हुई वार्ताओं के संस्मरण में भाष्कर दास जी महाराज का उल्लेख रहता था कि वह राम जन्मभूमि पर मंदिर के लिये संवेदनशील रहे है। चाहते थे कि संघर्षरत जीवन में मंदिर निर्माण हो जाय। हिन्दू समाज और हिन्दू संगठन भिन्न–भिन्न होकर भी एक है ऐसा उनके सान्निध्य में बैठकर ही महसूस किया। ऐसे संत के निधन से गहरा दुख पहुँचा।

विहिप केन्द्रीय मंत्री पुरूषोत्तम नारायण सिंह, प्रान्तीय मीडिया प्रभारी शरद शर्मा, रामलला विराजमान के सखा पक्षकार त्रिलोकी नाथ पांडेय ने भी अपनी श्रद्धानिवेदित करते हुए कहा न्यायालय में नियमित सुनवाई के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने वाले भाष्कर दास जी विहिप के साथ सदैव आत्मीय रूप से जुड़े रहे। उन्होंने कहा मंदिर निर्माण आंदोलन के न्यायिक प्रक्रिया मे निर्मोही अखाड़े की भूमिका और भाष्कर दास जी की उपस्थित को कभी इंकार नही किया जा सकता है। ऐसे भजनानंदी संत और उनके अखाड़े के प्रति विहिप की संवेदना सदैव जुड़ी रहेगी। ❑